

## 0 家



جلراوّل

$$
\begin{aligned}
& \text { خطاتططامر(جلراول) } \\
& \text { •................ } \\
& \text { طُّ اول(جولَنُ2004ء) }
\end{aligned}
$$

$$
\begin{aligned}
& 150 \\
& \text { الشاوت } \\
& \because
\end{aligned}
$$

| - ص\% | توان | خطبز | 安 |
| :---: | :---: | :---: | :---: |
| 1 | بيتكزورت/ورفآّنم |  | 1 |
| 9 |  |  | $r$ |
| 21 |  | ¢19^^) | $\mu$ |
| 31 |  | rر¢ | r |
| 37 |  |  | - |
| 47 |  |  | 4 |
| 59 | انثاقفّ |  | $\angle$ |
| 73 |  | \% $19 \wedge$ ¢ | $\wedge$ |
| 91 | الشا | ¢19^「 | 9 |
| 103 |  |  | $1 \cdot$ |
| 107 |  |  | 11 |
| 131 |  | rر/rر\% | Ir |
| 135 |  | -اركتّ | Ir |
| 149 |  | Lا | ir |
| 157 |  |  | 16 |
| 171 |  | كremı | 14 |
| 185 | اطاوتاير>مبيانكّ |  | $1 /$ |
| 201 |  | , 16 | 14 |


| ص\% | تُوان | خطب. | '6\% |
| :---: | :---: | :---: | :---: |
| 215 | لعبولو، | \% $19 \times \Gamma$ \% | 19 |
| 231 |  |  | r. |
| 251 |  | ه/\% | M |
| 263 |  | , 19^1ヶ | rr |
| 279 |  |  | rr |
| 291 |  | , 19^ル) | rr |
| 303 |  | \% $19 \times 1 \times$ | ra |
| 323 | جلسـ |  | r4 |
| 335 |  | < | r |
| 347 |  | ,19^4 | M |
| 359 | جلج | ו | ra |

 بیعتڭ












乏 يا وورن پپ


 تيركاعطاب-




 چپ

 ?
 -









 خلا نت يِّ وعه


 وامَركَ

 حِيُنِ بِاْذِلِْذَبِّهَاط










 پب










 يّلنّاطيا










 ع رنَ
 نْ

 انسانك كوكَ





 كر



الُّت隹 ;

 باق ند سَّ بحاوروه











 -艮










خطبثا















$$
\begin{aligned}
& \text { عالمالنيب والشارة كتثختاور }
\end{aligned}
$$





اورئز
الشاتتالُزطا








 ,وونَكياجا ومكان علا
















 باكَّ بي -


 يّ ايكسثنل








 , ويمر ب بي!.
 ،و











 صورتطالكبيانك كياك
-

 حمت اقن

امكز












كريّ.



 اورلبض كان كبيان































 احاس
























乏









res-













 آتّ














 پ!




 يوه آز
 ar

 احا

























 لوسارینوق6 ا 6 جا




كزات







 رحتكا

 نزوت



(روزنا







 - إتّا


گئ كـ آنكو كَ








6
جب آ~ (رشٌّن)



 6 -





 -




ظانْ كمبك كما رتكوا


















 ,ونو پُ







 , نيا
 :






 پ. rوبجن ع.





 سا,




 .بهو,


 اتپا"






 وبض








rونغ, ياكرو

كثي





آپّ

:



پينىا

 ج

 تهار عكأوناورتهارىز




 متقام




户


-
هر رم الير نوت , كم و غور غي

كمر و
اس ب ثبات گم كَ هبت كو گُورُ ور






زيا







 خطبثا:يهع


.


 يقينًأقابل رثكـب









خطبرك:بدز كاي!
"

 اورنمازجنازهيّثالّ بول"


（خطبرجحزْ




比实




 ， نك، اس ع户



جبالتك, نيوىانعا
 ج




 ק
 קز


كوَّ جَبْنِ







 بـ وبی ابيس زذ








 كا





 ***

之二6













 rو







~















 زبانكو Lجها گيا اس لِ


 *





تطباتطارجمراول




















كزث:
اور.











لاهَآنتْ















 زيإه \% Grasp


 كعْضز









 مغ
 شثتاوركيت علا












 چهوريا كر.


 .








 ووترى مثل

 سال

پّ



(رشثّن) (4 جإوزهينت






 .





 تونجارىز










 نـجن پّ










 إِّزْنتا

اتپ تأوت عكلا




 ا.










 گـ


ان 6تقوى゙

















 Kronas






ت ع

 ?






 خطبثانيع






 *تتنز







اورئز



 كَبالـت ك لِ , ك





















 .


左

 "








 پّا چا


 كاحレات

 -

ليكن جها










 سيال 6ام موال 6 زكْ




















 ק

















 קز


 پا بكا بح






 : ,


 بِّنِّ





"ينْ





;



三.











 اسآيت يّبيانز










كا

 بحكّتر:

 كرو پِ
 كـ







 ?







 بِ "يَ كَ جونا
 ك "ُ




唚 كـگ
:


 ون كذفان اولو ور
 كـ ت بِّ





گڭث




 نجاتڭث*






 پّ











比实













 اسآيت كاتثناب







 , ك بَ
 پِ

مرورى بحكـجاوت









 وُوب،










نيحتّقا "ا"

 ("تّاببآيت9)




 ك











بَ





 انثنّ يّنب








وَمَايَخْدَعُوْتَ


 جُوط بولا اسكما
 كا تَا كو


 ; ;






 بِّ

 ,و ک,






"نْ








 :
乏




 كخطبيّبكاتها:


 شا







 اوروهروطانفلا









 كبَكا



 6 ت

 كمبارانم انتّبا

 اوران كانفا فَّ چِ جا كطورپپ








 اللُّبِقُوْ











 كآنَول کんا

rوלَب؟-






 .
 .

















 وتقج جا

 يـبَ





.


ك


㞔


كانیال عذز


وهوتق آتا




.

(





 آپ
",",
 . جاوت
































 6ا









 بارورك










 كـ
~













 كاك ب






 گَ ん ـ







 ——

 زن گّقْ





 -促


 .

 ح户





 ب- جنا


 ب؟










نطاتطاءرجمراول











 , ونول











غطبتاططمبلدارل






 كا



 با با (U)

 ن

 ,屋

 ذ保






 تِ Shock


ليكن انق 6


 كَ


 تنتجن大"
ووبر

بك كجو


















پّ



 غَّ شيونى













 شار







 لبّ لِ


 <










 لبّ










 \#ッ














 بكى جاسكت ب؟







 تونّن



 سامان







 سール
 ْنُ

 بيانز انكوج كَتونّ


 6.


















 غكابويون" **


 ع

 .
 عالمالنيبضاب٪زان



غطبتاططمبلدارل



 , كا يَّكريّ

غنه








واميرصاحب
 , كَ
















$$
\begin{aligned}
& \text { ال山ّا } \\
& \text { آخْ }
\end{aligned}
$$

(خطبج:جدز







ارئرْز
 ; ;ا






 \%


-




 پ\% اورتهار ــ
 كهُ كگيت







 .






 جان جازيارهيإِآنا


 ",















 ان آيا








 .








 ,

نا









 צ'
艮
 ڤڭ





 اس اسمغماتنا كوجبي بحكا





 كرنظارولتَّ












 ،و كِيزكَ دَرَسْتَوَوْلِنَبِّنَالِقَوْمٍ



 ك!



اس اس
وَهُوَوَلَّذِ

كوبَى زات






 تمار


 آ

 ك! -

 وركؤو
 קز






 جبج <

 ثرو ع كر ويح اورز















 ،و ن والا ب؟-جب و0


زنض







 ; ;


 ; ;




 اوربیا عبا پ.








بـ


ـــا يَي E-
 انوروکك جحاوت



。








$$
\begin{aligned}
& \text { ،و نوبـ }
\end{aligned}
$$

(روزنا مـالفنل لوهr

$$
\begin{aligned}
& \text { إرإس } 6
\end{aligned}
$$




 بلاكت آز
 تناوتزْاكَ:




(1) (1) (1)






 سلمانول عذوال



 6تلقّ ورنج


 متخك



 حضور نز الايا النا



خطب.

$$
\begin{aligned}
& \text { ،وست بّب؟ }
\end{aligned}
$$



هr














 چنْرن كَبا




 جابنضاكَّ تزيك يكبل

 هـ هتيت يبا

 ثركا بابرابحا وتان








 ك ك ك ك


竍



 اور
 , فوا شِ
 .



 اس لـلـلـ"






"نْ
















 وثكيا








 ع







我








 كت - يردراس اظها كاعثير عرب! !


 , جَ





 گيت芜垵






كركم





 پ.








病

 ,


?
 بَ ك, كوروون U






 تيا تواكِي
 بِكَا



 پُ جها






آَيَسُحَالشُّبِعَافِعَبْدَهُهُ



 انز اوكزننى






 كوايكنويبو



?
 كرن ب- بيك وه زلي又 بَ




 , كَ







 , وو ک ب


















 ! !




 ثر ارْ












 احابج با


 پُ ا ا


 ونف ي畄





6م





 New Year's Day


 .





之潼

 God bless you. God bless you. - الْ






 , بيتح







 بِ. تث户يفلا









 وهآرتهار هوتوا







 كثت تيا
آزذى













 يـحا














 ع عتّلق، بنّ
 ح光



 چنا چּ ح









 نا



 عبار تكنا كـم تيزكانیبا,

 كَ

 .

 "نْ عبإت رَا









 زن گَك كونى




 يّنموجو





 ،وبا ; ;
 "我 بَ



خطباتطارجلمداول















; ;




 اروران:تقكم:

 سا حـ ـ اكرآ
 اس ع بدرآ چو. ; ;







 اور خا الن عـرانحـ آرام آ







 بإِّ انْ







غالبكت ب-






之
 يوا



تُبـن



 كث

الشاتحأُا










 ?

 وا




كنارْنٌ


 جان






















 ن نَ


















سبط










$$
\begin{aligned}
& \text { كـج }
\end{aligned}
$$

$$
\begin{aligned}
& \text { (خطبر.جد }
\end{aligned}
$$

تثنروتوز اوربورة'فاتكّثلاوت عبلدززايا:
 جمدز ابج

: 㛡




كأ نو.



 كَ







 هr



 كوهيبان

























 پّ





 اس الـ








 ק
 توب؟ا

 غَ

خاتهار اها بَ؟












 . تها





انانوّن





كُ





 ; زاي.





 انـبـ
 نروت










 -品


 تجبتوا|وربكتوكrوا-
 خران ن.

,





 سُرْ



خطباتطارجلراول










若 ,

 الطا








 شا



 (2,








 تو هيقت يـ بح نزوت بَ

 ك










 اور جوخاكَ راه يُز





 په
 انْ






 ; تآن كرئزْ تُ



 ".






 بتوْوْرورت


 .



























 - كير -
 هو بجال اكر تُ:



طاتشنْيّنير برب!



 كضروت






خطبثا





 ها



范 .户 ليقوا













كياجا 2 لكيكنج
اراوهكي بحكي!































 بيل جورونو انك وپرى






 جولنغن سحوكرآ 之

促







جا




乏

 كو وابّاراو
 تكطيف



ب-اوريب! تمير


 קف:




 ،ونَّ كيونكا












 نَكرنانبايتبرى!















 انا لُ


 هول يكينك,

 ك!



خطاتطارجلمراول






 آسان ب- باتِ ز立








 عطز

 عطا عطا

نطاتطاءرجمراول











 بيت ليز تِّبْ




 ; ; ;


$0-5 \cos 3$
)unsive:



پي夫ّويًا ?
 ?






مرورركونگا-




























 وكارى \%










 , يكموميراربول
 ك كَ ز"

لور لت بِ اوروز, انسورة كطزف:






















 كي -





















كيابْزبوكت بع؟


 اريت رَّتَا



 .










 ":











 ; ;



 آع




 rون.
















 آپ














ثروع كى
 كولكربيانز






















 اتح كَ جزا






















 كريّ
 غنّ












اور






 קز
 ك.


















 ي! (












 ب؟ باו



 .





-تار عكا


خطابتطارمبلرال
 "نْ















 - ب




اليحْبوط
 هنظ
















 .









 ．









 ال山⿸⿻一丿工二小）



خطاتطارجلمراول









پ\%











工
"ْيّا ק












ابانهو








خطباتطارجلمداول




 لاكُّل بَ


 -ت



 كي
 "مذاهوزاهزيا











 كوَّ






 *触
 روتنول كو٪ك








 چا







 واسطرُّ







خطابتطارمبلرال







 p




 ع ع







－．
 نظام：نا


جكا大冖⿰亻⿱丶⿻工二十⿴囗十






كـ غالـ






多
 الله اكبر الله اكبر لا الهُ الا الله و اللهّ اكبر الله اكبر و للِّه الحمد








 يزّ آن كم



 نبَّا,



( خطب جمدز





 آتنفه:مكّ



















چإش

 اتحْ












 پي زياهو! Y







 جا - يـ




 ،ونوّ








 يّ
















呂



ايكاوربا









هوبوكَ







 ،و





 ح共






خطباتطارجلمداول












 كوَّزنْنْ

 ي
















 كايمان 6ا حص بحكا




 ك لـ









 گّن





































نطاتطاءرجمراول












 كر ذك.باع


! ات















 آپكَ

































 آنغوالا







كياط يتا اتياركياجاع










 چاس























اوريورة|/فلق كَنْير








گ











 (94:-6ill)















 قورؤى
















 ק



















حُحْسَبَانَّا (1)




 ركنا










































"~ني تُرْزا




،






 غنض

 اليمكين:





"نْ
 ?
















 س



 (

















 چحْو



 كَنيجّ ,
 ها






 آخزىابزى












 ايك ووتراثريبـ

 پّ

 مثاً الشاكركا 6



 عط ز


 روانَ نزقاتك

;㑆埌

 .












 ب٪ ْنَ



تم







 ان تُو



 كر ذ 6 كوَّ بوازنْ






(خطبرجح;
















隹 ,
 ريز

次 6. 6.










،و



 6الكوْكُ


















جا با W-病



انانو 66?






 ون





 آ.









 عكَ




 اس اسك تراوزا






 اموال/وراسلا اوريـاركو

















 ايكورووتر







 , كُ شُيا





 .
 ب،











 رابقا، جَّمز








 كم艮
 كيم







קز

 قوّ ا ا










 پا







بَ* .
 -
شيَيو








 ? -





 جيا كي




كم




 كوايكز


 انـانزب! تبرّليوجا


 ت有










 كوڤثر ت بيل









 نتطظڤ غالبآ

 لنوّ عكلا
 ; ;

 انرونز يـت زيارهلز هغ

 Detach كـ ،و غنَ







 پ.







 الشتالُوفا




چنا چُجورون اجمك:كُ ايـ








 ان بيل سِّض



تيمكنِّ

-

 جنو



تِّاهوبا يَي 乏 ثيراول جران








 با

户




 گَ



 پُ جها











$$
\begin{aligned}
& \text { • اور }
\end{aligned}
$$



 ان































 يَوْمَ لَاتَمْلِلِ

تِّلّهِ (1)























 الU



 Event Horizon










 آغازكمزفلوطجا اتى





 مزل















 لينّخليت

















 ،و




 ها




 اورا چٌ اءمال علا پر پֶا












 لنت لا















 6\%









 ْنَ













 !
 "ي" رست ש.
范



انغ


 عمراص


 ورثغ ק












隹




 باكتّان بی آ.
 آ二人ن
 ليكن انجبور ليوكمزف:






 گاوراسَّنيجّ
 سب ع پِّ
 .

 گَ


קف
















 "ستخنز

خطاتطارجلمراول
 كاساسلام ايكلفز






 ليزواوـن



 تُنا كمْ
芜













郶



















چّا






















 الك هو وتت ابزيا









 اكَ








 تيّركث














 .
















 خطبثا:يهع,ورانز'ابا:

$$
\begin{aligned}
& \text { (رونظا }
\end{aligned}
$$

$$
\begin{aligned}
& \text { \% غطمط }
\end{aligned}
$$








 رنى




 ،

 با با
 !










 ز次





 كَجا






 ک



 گَ







קْورجان ونو







 رو پ پا

 -范










ق ت اوراب:










 چنرو
 , ,





 ;با يون علا







 ,ونّ ووم6آغاز

 , ,







 ،ون نيا









 ع كنل ع .


 قوربوكم


اسلا












 - آكّ













كَوجـ عُوْمكريی-




جها




 ب٪(ان وتت تكَ






 توازن


 "نجاتْ
































 اورنطارك;







 ()
 مغ












 آپْ








 "نْ




 أن لوگو ك ط

















( (يريانظابّ)










 "نْ













 با تو



 هِ پّ







 پُ

خطباتطارجلمداول



 با



















عerbio

 ها



 هو

 انتا ر6:جورورْقاوها





 كَ




 .






 بذخْ واض

 اب بوال ي يمياهوتا



组
 .











 ?






 تشا







 .



 ?






 اسقان隹














 جنت جططاتوفّ بي -









 ها


 نى بانُّ




















 ك جابلُ











 زن. ; يتّ تیم












 آپ پ.


 پ!







 كاكَّ شَا بَّ









苋 ،وجاتّ بي -
:













پ!










 عـع



نمازول كهوق وها






اورثز
.جنّ وان كويياكيا كيا -










-










پُ







 عبارتِّلج















































工





النائي
 .
 ناز رُ ،وجايكث
 :


















 -


 الخّ ،و














多


 .

 بك


كرى. نم




 قت اورور





车





پإِّلّ پ؛













 پپ








 سوايّلو

غطبتاططمبلدارل
جالتَ

 شا



























 (ررنظا


 كجى



اورتام ونيا







 ك.

لازظنتيج
.








پ.



 لازاًا


 كر



 (

 تِّريا
 -


 تيكينبـ




 ،


 زَآن بیا تُناوُ








 كر










كـاحبير <بنرو!




 جنت


 پّ























روثنَّالم

,
 الـا



 واهث"
 , ويكاكث كـ يكيا ب-




 ،و瘃











 بَّهبا

 كز












 پّ





 "وبا




واضّوجاوُ عـ
شوهومقام بجوايكلا

















 ثت رهبا






 .



















-


صرسالـ.و.ل.متصوبجاورنمارى
; مـواريال
(خطبرجدز







 ب- آ









 -

 .










 رُّا توا









 بيرون باكتانک



 روهِ






 رو پُتا














 سآزاركراـنآ








































 جلـس سالان尹ّ




خطباتطارجلمداول












 ب-
















 .













را بول (








 قأُكر ن






 ارزمثن اورثشو U6 قيا موإن





 ،و ב بي,







 シャا





 زبان كصرنت 66م 6،















|


 .





 تكَ

 "بَ




 بِ
 تنجّ
 پ!








病



 ? سارى يُّ

 , ور"
 קز



















rوتّ




共














 "نْ












亿㱜





 مرْنق




















 جها








 ها الها نو الا تواورج








 .






 ركلياجـا


آ~




جا












 ,











户



 نبت






 に

 طاتت بابِابّ -












































 .

 *"






 ناز
 كُجْ كنروت

 ٪




 يجٌا






















 كوور ب بن, بي . رإكر تمبا


 اज غا رِّا



 انبح
 * *


 هك كَ


 (ج)
 اك كـ


 ظا






 كوبثارنتم
 اكرآ پ.




 عكيا؟



 , ونو بيلرز












\%


 ;
 ربح



 پّ














$$
\begin{aligned}
& \text { او }
\end{aligned}
$$





 9.


 خا كَا ،ول


ابج







 "ا





 6ميابو6مرانزما











 انفروU ع, وركر












 .













 اليَّيارى.



















"乡 ك







 ; ;



 تامثان وثوكت كباوبوروريان بوطا





 عرو اوثات يّنز







 اسト





ي吕 نمازوس ع



 اوركنت 6 ركنانكض





















 بلا كسْروپ

 \%




 モCル-








 آ گ \% ب







 سー



 ج位
 كـت
 ب-
: مرنا

 ز




 اليسواقناتوه
















 بی بُت آزاگ"




"








ثّاوركب چِآيا -

اور جبج

پ
،و

 ".

艮



 چ化




 زن






 ثهُ























!




















 ايك بات \%

خطباتطارجلمداول
乏كا

 لو
 رיט－يبال




广涫


 ＂，



 ；；

 ! !













 كيا!
 - -































 آخزى
 قرو





＂と
كئ ونع يبا



定
＂＂演




为
素 وايّن






 كاايمثن جواتث ورو ـآتا




 | أْنی
 سوارنْون


 ايانووجاتا





 پ. نروريا












 ,





 فن














(*







 "مها


 كن نُكنْ





 ثط

رضاربّ



 ¢ ب،

 بإنْ
.
 جـ





والط!

 \%
















 ل بجاتٌ تا





 ,







 آپٌ بخ ; ;

آَا ابُنُ عَبُدِالُمُطَّلِبُ
اَنَا النَّبَّهُ لَا كَذِبُ كِ

































共


















 "
 اوربٌا






















 نا


 يار س ع،























 الشپ

 الپّ

 زيإ\%




 اكرامث**














 پّ
 -





 باورآنْه.






Ahmadis over another section. So it is a strange world in which we find today, not even today I mean strange world in which ever a man has found himself that leave taking is also sad, but going leave taking also becomes a must. And it has also an element of pleasure too, because that sorrow if turns into prayers also gives you a sort of satisfaction and a sense of achievement. So it is a very complex affair. It is impossible for me to describe how I feel. Not perhaps it is possible for you to describe how you feel but this is life. This is the scheme of things by Allah. We must accept it. So as I will leave with a sad and heavy heart, turning that emotion of sorrow into prayers for you, I request you to do the same for me because all together, you and me, that is one Ahmadiyyat and there is no distinction there, in any way. And who pray for Ahmadiyyat will be praying for Islam, for the cause of Allah, in fact. We must create a society of greater love, greater understanding, greater sacrifice, not only for the sake of Allah but for also each other. By doing so will be adding strength to Ahmadiyyat. May Allah, may Allah help us achieve the noble goals He has set for us. Assalam o 'Alaikum Warahmatullah.
(السلام عليكم ورحمة الهّ)
to show mercy or kindness to some parties. It is not their right to judge over the judgment of the Qadi. If it is wrong and you hundred percent believe it to be wrong even then it is your prime responsibility to execute that, because the responsibility would fall on their shoulder of the wrong judgement, not on your shoulder. They will be answerable to Allah, not you. So the execution must be highly efficient and I should not tolerate any delay, conscious or otherwise in executions. But give them the due rights of appeal according to the traditions of the community or the decisions of the community. If somebody has a right to appeal to a higher board, why not let him, but what I mean to say that if an appeal is not lodged to the higher board or if the higher board has ultimately decided against such a party or if the higher board lies here in England and there is no such appeal against them, what ever the system be, I am not aware of that, but once it is decided, execution must not be delayed because that would be delaying justice to the party.

And in the end, as I take leave, I remind you to pray for me and for my journey back home. May Allah make it successful and guard over us, myself and all my companions. Leave taking is sad indeed; there is no doubt about it. But responsibilities stand superior to these emotional affairs. Also going back has its own demands. There are such loving Ahmadis there; such devoted Ahmadis that is impossible to make preferences of one section
from headache can perhaps be beaten by number 10 . So create that health, bestow that health in the انثا الها تعا لي Ahmadiyyah society and then you will see that you will be able to pursue your noble goals much faster and more actively and vigorously.

For that I have in mind, to form a commission here and already I am thinking of certain names. I I 'll declare that before I leave. A commission to go into the financial discrepancies pertaining to the people living in England or to people who have left England and either they are targets of these discrepancies or dishonesty or they made people living in England targets of their dishonesty, what ever the case be. This commission will collect all these complaints and report to me about the procedure if they should adopt.

Similarly there are reports of marriage dissolutions or misbehaviour by husband to wife or wife to husband ultimately resulting in marriage dissolution. While we are preaching to this world that Islamic way of family life is the best and has the best example to be followed, and we at the same time contradict our word by our actions, this is doing injustice to Islam, so that should not do either. For that I request the Board of Qada (قضـا) to expedite all such cases which are still pending. Now once the Qada has decided, execution must not linger behind. Because if you linger in execution or your decision, then you destroy the whole system of justice. It is not for those who are appointed to execute decisions
following the dictates of the Holy Qur'an and following the policy as laid down by the Holy Qur'an.

As far as these financial discrepancies and misbehaviour is concerned, I lay great importance to such things, because a society without 'adl (عدل) cannot flourish, cannot go on to the next higher stages. It is impossible. It will remain in a state of decay and would never be able to prosper. So those small things which tilt the balance of Islamic culture in Islamic society in the favour of worldly affairs, that society is unhealthiest society. It is like a society for example; if we give the quote illustrate the matter by quoting the example of single person. I should say a society is like somebody who is suffering from high blood pressure or low blood pressure, or too much urination, too highly sensitive and active kidneys and so on and so forth. So any unhealthy person is incapable of achieving any thing in life. If the health is bad in small respect, to that respect he is hindered from taking pursuit, healthy pursuits of life. But if the injury is more he is incapacitated in more words in one than some times these people become bedridden.

So health is highly important before you can think of breaking the world record, and you are made for breaking the world record. This is your position this is your station in life. So no unhealthy symptoms should be tolerated, however small. Even the world athlete in 100 metres, if he is suffering
behaviour. If you behave correctly in this sense Allah will show mercy upon you. You create the most ideal society which would be flourishing and which would be expanding, which would be gaining power in every direction and nobody would be able to suppress such a society.

Now it was pointed out to me by some friends that in the first sermon I was rather too harsh and one sidedly harsh upon the members of my family, the family I belong to. And I single them out by saying that if they borrow money from some body or try to borrow money, everybody should take precautions and I pointed out to them that it is a grave responsibility to behave cleanly and above board in financial matters otherwise it is Hadrat Masih-e-Ma'ud's name and honour which is some times defiled by those who are hurt. I such did it, not because I was not aware of other people doing it. But because I know the approach of Islam. Islam does not just say that charity begins at home, it also tells you that admonition begins at home. This is why Hadrat Muhammad Mustafa炎箩 was told in the beginning of his office (Al-Shu'ara':215) اَنْذِرَشَشِيُرَتَكَ الَأَقُرَبِينَنَه you give warnings to your kith and kin who are closest to you. So he started the process of warning from his own family people and then it was that he went to the top of the hill and addressed the whole and rest of the Mecca. So I was not unaware of these things, only I was

But if you appeal to the higher authority, and the highest authority is Allah, why not have trust in Him. If He is alive, Allah, if He is a real being, then He is the last and final authority and the supreme authority. If He is not a real being, if He is just imaginary and a mythical person, then just leave this organization. Why to get stuck to such a stupid organization which is believing in nothing and laying all stores by nothing. So this is a simple answer to this question. Instead of censuring such community and injuring those who believe, you should simply say assalam o 'alaikum (السـلام عليكم) and leave them alone. But if the fundamental concept of every religion is Allah and His existence and His live interest in affairs of men, then you must make the final appeal to Allah if even Khalifah does not listen to your way of thinking or your complaints and does not agree and you still insist that he is taking side with the administration unduly, Allah's court is the final appeal.

And what is a Khalifah? Nothing compared to Allah, not even a speck on earth. He can be annihilated by one word of Allah if He so chooses. So when you have access to the highest and the most powerful court, to abandon that and to go down to the masses and start talking among them, if it is not idyllic pure and simple what else it is? This is idolatry, this is a proof that you do not believe in the existence of Allah, (and) you are only following some songs and nothing else. So be mindful of this

Allah they went to the masses while no religion springs from the masses. It comes down from Allah. So instead of sending your appeal to the right direction, if you go to the wrong direction and by doing so also damage the system and the fabric of the community by making one-sided propaganda of which the other party has no opportunity to defend, the other party even some time does not know what is happening and what is being talked about against him.

So one-sided propaganda, No: 1, is forbidden in Islam, positively in the Holy Qur'an. Whether it be against an Amir or an office bearer or an ordinary Ahmadi. It is very strictly forbidden. But if it is directed against the representatives of the organization, then it is doubly evil, because it hurts the devotion of Ahmadis, it injures that devotion. And they become less active Ahmadis under the influence of such propaganda. So what are they trying to achieve? What do they want to hurt? Hurt the cause of Ahmadiyyat? Take their revenge, even if they are rightful, to take revenge their personal revenge from Ahmadiyyat and the spirit of Ahmadiyyat! This will not do, it has never been successful in the history of Ahmdiyyat. Such people have always been chucked out by Allah without regard to whether in the initial place they were right or wrong. The method they adopted was positively wrong and injurious and they are punished for this method.
find distinction between him and the authority which they were usurping or misusing and many of them have not opportunity to reach directly to the Khilafat and plead their case as they should. With the result that they think this is a representation of Jama'at and ultimately they fall out with the Khalifa as well.

So as I told you, they are standing in the way of Khalifatul Masih and the people; Ahmadiyyah people, which they have no right to do. So the answer to this problem, if it occurs, is this that you write direct to Khalifatul Masih or to the office concerned, for example if it is the financial matter you could write to the Wakil ul Mal, if it is a matter concerning Tabshir you could write to Wakil ul Tabshir. But if someone is not satisfied at that he could directly write to me in this capacity of Khalifatul Masih, and send a copy to the Amir if they are very hasty. This is a minimum they are expected to do. But otherwise the normal process to direct their application and complaints through the channel of Amir, or the officer concerned who ever he be, and send a copy direct, that would be better. So no problem is left at all.

But one thing I must remind you, the court of appeal is in the higher direction even in the worldly affairs, not in the lower direction. Those Ahmadis who make the mistake of appealing to the masses for the wrongs done to them have always being annihilated by Allah. They have been destroyed, nothing is left of them. Because instead of going to

Things of friction, born out of misbehaviour or misconduct by any body or wrong bent of mind for example.

What should one do? That is the third point which I want to make clear. If you disagree with any officer in the community, then it is your first right, not only right it is your duty to report this matter to the centre, and report it through that particular officer concerned. Now if you fear that he will not forward that report to the centre in due time, what you can do is send a copy direct to the centre. Now here I must tell you that as far as relationship between every Ahmadi and Khalifatul Masih is concerned, anybody can write any number of letters to Khaliftul Masih directly, there is no procedure involved at all in any way. But when you speak of somebody else, in censuring terms, then according to the teachings of Islam it is obligatory upon you to let him know otherwise it would be a ghibat (غيبت). It would be just painting him in black one-sidedly without him knowing it. So this is why this procedure is involved, otherwise, nobody stands between Khalifatul Masih and Ahmadiyyat. They are one and the same thing. It is impossible for any body to interfere and stand in the way. So it also reminds me that if the officials of Jama'at are misbehaving in any way to others, they actually stand in the way of Khalifatul Masih and the Jama'at. Because some times some people, when they are angry with their local officers they cannot
claim such dictatorial power, in the worldly terms,
 hood. But there is no dictatorship in Islam. Greater the power or concentration of power, more fearful is the office because everybody is ultimately answerable to Allah. With the result that fear intensifies the greater your power increases. So
 manner. In such beautiful and attractive manner that all through his life you can't pinpoint a single occasion where any body on earth could call that occasion to be an exhibition of dictatorship. He ruled through wisdom, he ruled through prudence, he ruled through love. And if you rule with these three factors, then it is impossible for dictatorship to come into the picture. It is nothing to do with prudence, dictatorship has not, nor with wisdom nor with love. It does not belong here. So this is the sort of administrative power which is devolved on all Ahmadis serving in any capacity. So they must be very weary that they should keep the honour of this trust alive and intact and must not misuse it in anyway. If these two aspects are attended then most of the problems automatically dissolve into thin air as if they had never been.

This is the ideal society which Jama'at Ahmadiyyah is endeavouring to create. And towards this thing you must put in your entire endeavours. Now when something happens despite every thing, despite the best atmosphere, things do happen.
have said, ultimately their obedience is to Allah and not to a single person or human being. So this is the entire system, in a nutshell.

So, because they have got delegated powers from Khalifatul Masih, they must not misuse their delegated powers. I should abhor to appoint an Amir who is unkind to Ahmadis, because Khilafat has a direct relationship with all Ahmadis. They are made to obey not because they are made to feel inferior, but only to keep order, no other reason at all, but order does not mean harshness and unkindness. I should not feel safe my self in the hands of any Amir who does not behave as like I should love to behave to other Ahmadis. So this must not happen. No missionary incharge, no president should misuse these powers because when they hurt those Ahmadis and they obey them despite being hurt only for the sake of Allah, they'll be hurting me and they'll be going away from the cause, path of Allah.

So it is a very serious affair. You must keep this trust intact and try to behave like Hadrat
 followers. No more authority more supreme than
 this world it is impossible to conceive other person with greater authority because he was representing Allah in all consummation no one had ever
 did. So if some people object to Islamic way of organization as dictatorial, no one on earth could
and peaceful it is, this is why the name is Islam; it means peace. It spreads peace; it breeds peace; it dictates peace. No disorder is acceptable in Islam. So in this spirit of Hadur-e-Akram 瓨羂 teachings you should follow the Amir and all other office bearers, regardless of whether you consider them to be inferior in taqwa or in righteousness, that is not for you to brag in this world, it is for Allah to decide after the death.

Now I come to the responsibilities of Amirs, they have their obligations. The office bearers have their obligations too. They must be kindly towards the people on whom they have been appointed, not to rule, I can't use that word but to running the administration, they follow him (the Amir) only for the sake of Allah and not in his personal capacity and to make it more particular, of course ultimate end is to please Allah and nothing else. But to make particular they follow the Amir because he has been appointed by Khalifatul Masih, for no other reason. They follow the entire system of organization because that system has been approved by Khalifatul Masih. They have not accepted Bai'at or they have not taken oath of allegiance to every Ahmadi, they have only taken oath of allegiance at the hands of Khalifatul Masih. So every thing gets concentrated in his hands and then commit it emanates in all directions and as long as it is coming from him Ahamdis follow it because it is an article of their faith that he is appointed by Allah. So, as I
they sit like judges over the characters of certain other Ahmadis. They say, we know them; they are bad, whether they have evidence enough or not, whether they pursue the allegations in the proper manner of producing evidence according to the Islamic dictates or not, they are not concerned. The only position they take is that we know such a such person is bad character, so he should not hold any office, particularly they take exceptions to his becoming Imam in the Slat(صلوة).

So such a question was also raised at the time
 all times to come. The question was that if somebody is badkar (بدكار), somebody is vicious person, a wild person and he is bad thoroughly bad in character, if he is appointed as Imam-u-Slat (امـام الصـلوة), you know how abhorring it may appear to some that such a person to be with in ( - ) with the righteousness should be made leader of those righteous people and standing in prayer, in congregation prayer before Allah. So they said if such a person is made Imam-u-Slat what should the followers do? Hadur-e-Akram should follow him; it is Allah who accepts the prayer. He will be answerable for his deeds and you will be answerable for your deeds. If you follow such a man because you follow the organization and discipline, Allah will accept your prayer because it's not the Imam who is going to accept their prayer, it is Allah. What a beautiful teaching! How beautiful
black slave is appointed Amir over you, whose head is like the head of a Munaqqah ( $م$ ); a piece of raisin, even then you must obey him. Now these were the two things which irritated the Arab mind, which could irritate the Arab mind, one to obey an 'Ajami (عجمى) and coming from an area which was known to be the area of black people. Arabs of those days considered it to be a personal insult to follow such a people. And on top of that they being slaves. Slaves and blacks all together you know both things together made it abhorring to the Arab to accept them as their leaders.

Secondly to have a big head that was a sign of qiyadat (قـادت), of leadership and wisdom. So the Arabs took pride in having big heads because that was a sign of great wisdom, and it was understood that the smaller the head be, the stupider and fooler the man would be. More fool, if he has small head.
 points of abhorrence together. And said if there is a slave belonging to an area where the colour is black and also if his head is so small that there seems to be no brain in him at all, if he is appointed an Amir, you follow him.

Then came another aspect of the same situation, that was if somebody is leading you in prayer. Some people are detective minded, they sift things and make things that they perhaps have got information of one's personal life much more than the rest of the community does. With the result that
their rights according to the best traditions of Ahmadiyyat and the rights of their superiors in administration. Superiors in administration, I repeat, because those who have not been involved in administration, they could be much more superior to those who are involved in administration in the eyes of Allah. Because it is a matter of heart and a matter of fear of Allah and a matter of taqwa (نقوى) where real superiority lies, so only in this context I am saying who are superior to those or placed higher to those in the ladder of administration.

Now some rights I must speak upon now and here. Number one: if an Amir has made a mistake and ordered you wrongly. If that order is not in clear violation of the Holy Qur'an you should obey him, however wrong he may be appear to you. As I have made it very clear if it is not in clear violation of the Holy Qur'an, you must obey him. If there is a difference of opinion regarding a particular verse of the Holy Qur'an and only interpretation differ, even then you should obey him. Because it is not for you to choose the interpretation and using that excuse to disobey your Amir.
 upon the obedience of Amir that people got surprised. They said Hadur-e-Akram! if somebody is like that even then we should follow him? He said yes, even then. If some body is like that, even then we should follow him? He said yes even then. At

as workers of the organization, they draw their respective rights and prerogatives from the institution of Khilafat. They are different in different tiers. Some times by not understanding or by not knowing the rights of particular office bearer and limitations of their rights, so many problems crop up. People do not know their rights and do not know the rights of those who have been appointed in certain official capacity.

So this is a very important thing that the Jama'at of England must make it known to every Ahmadi. What are the limitations of these office bearers and what are their rights and obligations and what are the limitations of those on whom they are appointed as Amir, or as president or in what ever capacity they are appointed. If you know clearly your rights and your limitations, then there is very little chance of some body creating misunderstanding and sowing their seed of discord.

Mostly it is in ignorance that these things spread. Darkness and ignorance are one and the same thing. Knowledge is light. So first of all, light should be spread in this area. Every body should begin to see his path, then there is very little chance of coming into clash with each other or running into anybody because with seeing eyes only very reckless people do that. That happens, of course, even then but very rarely. People with normal balance of mind do not run into each other while they have seen things. So the whole Jama'at should be apprised of
that will suffice you". That is the minimum which is required. Now if somebody falls below the minimum, then of course, he comes under the censure again of Allah, not of human being. It is only for them to admonish him with kindness, but still he can be admonished. But those who remain within that sphere and don't transgress in any way the dictates of Islam, no body has a right to speak harshly to them.

So if some of the Murabbis some of the missionaries are living a decent life. Nobody knows what else are the resources they have access to. May be Allah has provided them that money from some resources which they do not want to reveal. So as long as you do not come upon, some positive charge of mistrust of misuse of money nobody has a right to say that look here, such a such person is living decently and he has no right to. Why not? Allah tells He has created these things for the sake of true believers. Here they are shared by the rest but in the hereafter, they would be exclusively for the believers.

Now another point is that you should be mindful of your duties to the Amirs and other office bearers of the community. The Amir and the other office bearers exercise such powers on behalf of Khilafat, on behalf of the institution of Khilafat which is finally responsible for the entire organization of the community. So in this capacity
created out of His love good things of life to be used not to be abandoned by His people, by His true servants. So if they make use of these things there is nothing wrong at all with it. And after this verse of the Holy Qur'an nobody on earth has a right to censure them for good living, provided as I have mentioned before that they live within the four walls of Islamic dictates. Also provided that this living does not bar them from taking part in the sacrifices in the way of Allah.

When we plead austerity, it is not because living a life of comfort is prohibited in Islam It is only because if you can save more, you will be more able to serve the cause of Islam. That belongs to the region of Nafl (نفل) as it is said in Islam, Nafl (نفل) is a term which means after doing the obligatory things if you do some thing of volition that is Nafl (نفل) so, that pertains to the department of Nafl (نفل). But even if somebody remains restricted to the department, to the field of obligation, no man on earth has right to censure him. Hadrat Rasul-eKarim 䋼 was once asked by a visitor, "Tell me about Islam". He, in reply, told him the fundamentals of Islam and also started telling him of acts of volition later on; of good acts which pertains to the region of Nawafil (نوافل). So he said, "Look here, I will do just that what is obligatory and nothing more, so will I be forgiven?" He said, "Yes,
approach to life, that if an Ahmadi is living a normal decent life they become censorious, they become extremely stingy in their remarks about such a person. They feel that he is living a luxurious life and they don't know the essence of what luxurious life is according to Islam, what is wrong in Islam and what is right in Islam. To enjoy the best things in life provided that you remain within the four walls of prohibitions by Allah is not at all forbidden and provided that when asked for financial sacrifices you remain in the forefront of those who sacrifice their earning for the sake of Allah, so after that what is left to you, is completely your own choice, how to spend it.

If you live decently and nicely, it is not at all forbidden for you to live a decent life. What is forbidden has been made manifestly clear in the Holy Qur'an. So after that, nobody has a right to declare something forbidden which is not forbidden by the Holy Qur'an. This is what has been mentioned in this verse:


Say who has forbidden the good things in life to Allah's servants which He has created for their sake, for this life as well as for the life to come. He says for this life they are for the believers and for the life to come exclusively for the believers. So Allah has

Masih-e-Ma'ud's rextel directions is a very different type from the one you see. Many among them are those who devoted their lives after studying to the best of their capability and they were left with two choices, either they could pursue the worldly goal or offer their services for the sake of Allah. The same people, I know, some of them, if they had pursued the world instead of joining Allah's forces, could have earned much more than those who seem they are financially superior to them, so they can mistreat them. They could earn much more money and they could have highly respectable places, they could live even better than many of the non-devotees can live. Yet they don't mind it, because they know their reward is with Allah. So, as far as they are concerned, I am not bothered about them; I am bothered about those who mistreat them because they will fall under the wrath of Allah because Allah does not like His people to be mistreated, those who have offered sacrifices for His sake. So be mindful of that. If we have shown some kindness to those missionaries, still it is for them to accept it or reject it, if they accept it. If they are showing a good turn to you by accepting your kindness. They do not become your slaves, if you have shown mercy towards them.

Secondly, do not judge Ahmadis harshly if they live decently. Now this is a very strange thing but this is also true that some people, some how, become so strict and narrow minded in their
fault of the schooling he has had. But there are so many factors involved that it is not for me to analyse them all here. But one thing I know, that some one with what ever he has, if he has offered his life for the sake of Allah, he should be treated respectfully and kindly, and cooperation should be extended to him in all departments.

Some times I know, not here, but it may happen every where in the world, that some people show kindness to a missionary and then they think that by doing so, they have turned him into a personal slave. Now this is the common tragedy we find in the rest of the Islamic world vis-à-vis their mulla which we find serving in the mosques, in the villages particularly in the Punjab. There the mulla is supposed to be a personal servant of all the big land lords of that community, because he is being fed by them. In what manner of feeding, there is no point to discuss it, but, because he is ultimately kept alive at their alms, there he is mistreated; he is insulted in every day life. The only hold he has over such a society is by way of creating hatred. Whenever he speaks of hatred for others, people follow him, when ever he speaks of goodness and sacrifices for the sake of goodness, people desert him. That is the only relationship left now. We must not make it happen to our community. We have to go a very very long way towards the final achievement of our goal.

And the kind of missionaries which has been created with the grace of Allah through Hadrat
showed to me and to my companions, and also to all the rest of the visitors, who came from all over the world. Every body, I know, has gone back very happy, so shall we, and we will be carrying sweet memories of this visit which will انشاءالشا keep turning into prayers and I hope Allah will listen to those humble prayers of ours.

Now I have to say a few odd things. I have jotted down a few diverse points to speak upon today. First of all I want to say a few words about devotees of life who are serving here in various capacities. Those people who have offered their lives for the sake of Allah, they deserve special respect from the community and special help. They cannot become successful in the pursuance of their goal unless the entire community, entire Jama'at puts in their effort towards the achievement of that goal and help them. Not only this, they should be shown special respect and kindness. I have noted with regret and with pain that in some places some people have not been kind to their missionaries. They have been very critical of their work and so loudly critical and censuring that their sharp tongues cut deep into their hearts and they felt the pain of it although they didn't mention it in any way.

Different people are made differently, they have different educational backgrounds, if somebody is not capable of addressing you in first class English, it's not his fault. May be it is the fault of the system which brought him up, may be it's the

## Obedience \& Obligations to Amir

## \& Respect of Missionaries

(Friday Sermon Delivered on 8.10.1982 at Fazl Mosque London)
After tashahhud, ta'awudh and recitation of Surah Al-Fatihah Hadur said:

This is going to be my last Jum'ah we are going to say together, this day, during this visit. On this occasion, first of all, let me express my deep sense of gratitude towards my Lord or Allah, Who has shown mercy upon us and particularly mercy upon this humble servant of His by making this trip meaningful and purposeful. I saw help coming from Him from every direction in every way. He is the Master and the Lord of the universe, so all our efforts can only bear fruit if He shows mercy. He has been very kind to us and we hope that انثاءاساله He will continue to be kind and merciful, forbearing and forgiving.

After this I express my gratitude to the England Jama'at for their kindness and hospitality, and a very generous hospitality for that which they

This is verse of the Holy Qur'an that places of worship are made for worship alone. You should not discuss your own private affairs in the mosques. Only religious talks should be held and that too when prayer has been finished; not while the people are saying prayer, is it permitted for you to start talking even on other religious topics. So these are the dues and obligations which we must fulfill towards mosques. You come here just for the memory of Allah. Remember Him in you hearts or a bit loudly. That is permissible, but not for you to talk of various things and indulge in gossips and this and that, as if this is a social place for you to do it. It is not so. It is house of Allah and you should remember it and teach your younger generation as well. Allah bless you. (آمين)
third day in which we do it till 'Asr prayer. So every generation should be informed of such things. All the traditions of the Holy Prophet of Islam (peace be upon him) must be capitalized and generation after generation should be told and retold. But I found it here, unfortunately in England, that our younger generation is not apprised of these things. And so when I started reciting it, nobody followed me. Even young boys, belonging to older generation would not know what I was saying. So these things should be taught, like in schools.
الهه اكبر الهه اكبر لا اله الا الهه واله اكبر الها اكبر ولهّ الحمد الهد اكبر الهه اكبر لا اله الا الله واله الكبر الله الكبر ولهَ الهمد اله اكبر الله اكبر لا اله الا الهُ واله اكبر الهَ الكبر وله الحمد And again it reminds me of something suggested to me this morning by someone that I should speak on the subject of the rules and obligations towards mosques, of those who come there for worship. It was pointed out to me by a very highly respected friend of mine that gradually people have started showing the signs of disrespect, inadvertently though it be, but surely the signs of disrespect are obvious. In the mosques they begin talking loudly of the worldly affairs. Even while some people are saying prayers they are not mindful of the fact that the house of Allah is for the worship of Allah and for nothing else
were saved. But this can happen and this has happened before. In this country you should also guard against this. So a system should be evolved, should be recorded by the Imam and we should go about it in an ordinary manner. We must make a scientific approach and when this sermon reaches other Ahmadis all over the globe, they should follow suit, as well. I am so excited about it, in fact. I want it to be done now and here but it is not possible; it will take some time but انشاءالش within one year we should see this system of new heaven operative in the world and all the world should realize that something has changed. And they should admit defeat in the words:


May Allah grant us opportunities and strength and the will to fulfil this noble objective as best as He pleases. (آمين)

After prayer Hadur said:
In fact, it is the tradition of Hadrat Muhammad
 day), during the day of Hajj an evening before the Eid day i.e. the day of slaughtering, he after 'Asr prayer, always recited loudly:

اله اكبر الله اكبر لا اله الا الهَ واله اكبر الله اكبر ولله الحدد
And he continued to do so after every prayer for the following next two and a half day. So this is the
the Holy Qur'an, as I see it. Through my eyes you will see such beauties that no person who attempts to distort the face of Islam will succeed in doing so as far as you are concerned, because you will have observed Islam through my eyes. All the beauties of Islam would have been made clear to you as I see them. After that there is no question left of any misunderstanding. So this is a very important fundamental thing for Ahmadis. They must first of all prepare themselves. They must first of all apprise themselves of the correct approach to Islam. Once they do it and then afterwards they study the literature of enemies of Islam, then no harm would come to them. It is impossible for them then to feel defeated or to be in any danger of being misled by the enemies.

But lesser people who have not done so, I have seen among Ahmadis, who start reading the literature of the enemies without first reading the literature of Ahmadiyyat, I have found them ultimately misled, in fact. There were many students, not many but there were some students at the college, when I used to study in Government College, Lahore, who were totally wrongly influenced by such studies; by studying the history of Islam through the eyes of the so-called orientalists and so on and so forth. They were ultimately themselves poisoned. So I had to work hard upon them to discuss things with them and to let them see light and ultimately, with the grace of Allah, they
we did. But now when we attempt to attack this heaven, we are being pursued. It is strongly guarded by such staunch guards as would not leave us alone. Whenever we attempt to attack heaven we are verily punished, thoroughly punished, with the result that a fire pursues us and would not let us do as we will. This is the meaning of this verse and as long as we achieve this high objective, this goal, for which Ahmadiyyat is now created, with the grace of Allah again to defend the values of Islam, we will not sit satisfied and content.

So, I hope انشاءااله very soon this machinery will start working and it will start from England. Before I leave I want the names of such scholars who devote their selves to this task. Whatever their profession be, it doesn't make any difference. They should be able to read English well, they should know something of Islam; not that they are totally ignorant of the Holy Qur'an or Masih-e-Ma‘ud and undertake to defend Islam. This cannot happen. I mean those who at least know Islam; who have read Masih-e-Ma'ud and they are capable of understanding the values of Islam in the first place. Hadrat Masih-e-Ma‘ud has made it manifestly clear to every body that unless you read my books, unless you read new literature produced on Islam, if you read other books you'll be wrongly influenced by them. The only defence of you is to first apprise yourselves of the teachings of the Holy Qur'an and the traditions of
admirably. But they wouldn't even mention the name of Jama'at and Jama'at's view on this, with the result that they achieve two goals at the same time; one that they go on attacking Islam, without referring to such books, in which defence of Islam can be found by any scholar who wants to pursue the subject further, and secondly they please the nonAhmadiyyah Muslim world by doing so and become greater champions of Islam, apparently in their eyes. They take the stance that: look here, Jama'at Ahmadiyyah is just nothing; it's insignificant. They don't mean any thing. What ever they have said by way of defence of Islam is just nothing. It is all a joke and we don't even want to mention their name the scholarly people of the world; because they are too small and insignificant people to be mentioned in such great books as written by great orientalists. So by doing this they please all the Muslim world. They say, look here, these are the true people, they know where Islam lies and where it does not. And this is how the cheating goes on and on, manifold.

But we are not going to leave them alone انشاءاله new heaven is created a new change takes place and that change is mentioned in this verse


Strange thing has happened; a new heaven is created. Previously we used to attack it at our pleasure; at pleasure whenever we pleased to do so,
being added. So what will happen ultimately is that after they have fed us with this information, the missionaries-in-charge will see if there are any authorities left untouched, or too many people are drawing attention towards one or two authorities alone. So (they) will try to create balance between them, with the result that in the centre we would know that all over the world whoever writes against Islam is being observed and pursued by Ahmadis, with the grace of Allah and nothing is left unanswered then. This is the responsibility of the centre to see.

So انشـاءااله تعــلى we'll not leave Islam as undefended; it's impossible. As long as we live, this cannot happen. But, as I have observed, most painfully I came across certain books, in which such enormities have been said against Hadrat Muhammad 瓨酸 and the Holy Qur'an, that it hurts one deeply; in fact, one is cut to the core but again unfortunately all that has been done in such a language as if a friend is speaking and not an enemy and such, so called friends are being lauded by the world of Islam and I also noted a strange tendency among them to ignore Ahmadiyyat completely; not even to mention Ahmadiyyat, wherever they have attacked Islam. And they are scholars and, of course, they have read Ahmadiyyah literature, some of them I know positively. And they also knew at that time that in that respect, in that particular quarter, Jama'at Ahmadiyyah had defended the cause of Islam
established with the grace of Allah and we have regular jama'ats, to call the attention of all the Ahmadis, I mean the local administration there should call the attention of all the Ahmadis to this fact, and they should be required to send in writing to the missionary in charge, which particular author on Islam they are going to study. So a group of study should be created, for example, five or ten Ahmadi scholars should be appointed to study, for example, Montgomery Watt. All his books should be studied and analysed completely and an inventory should be made where he has gone wrong, according to our belief, where he has intentionally or inadvertently attacked Islam. And all those books, which he has refered to, should also be studied by that group originally. And it should be verified whether he has quoted those original sources correctly or wrongly. And then whatever they have achieved should be refered to the centre. There we shall go into further investigations and decide how best these allegations should be met with. With the result that انشـاءالهُ تعـالى in the near future new literature in defence of Islam will come into being and that is what is meant in this verse 'by the creation of a new heaven'. That heaven is not now going to be created; that heaven has already been created - first by Hadrat Muhammad
 on the same pattern. Only it is weakening down. This is why we have to reinforce the system. That is all. Nothing new is being suggested; nothing new is
should do is, I have that in mind, a very clear policy to pursue. What they should do is first of all detect where the wrong has been committed, prepare a list of all these things, analyse them, pursue the original sources which have been referred to in the books and try to come out with effective answers, to their own best capabilities. But should not leave it at that, because it is just possible that they are not capable of defending the values of Islam effectively because there is lot of treachery involved in this. A lot of investigation in many quarters has to be done before you can come out with the proper answer. So all these things, all these books with references, every thing should be referred to the centre. There we are going to create a cell انشـاءااله which will collect all such attempts made by the enemies of Islam and we will tabolize them and then make a research work pursuing all the authorities they have quoted, with the result that after collection of such data we will be able to pursue the enemy to the last ditch, he can go to. And this is a very important and urgent matter. How can it be done? I have got another plan which I want to develop on now. If, for example, we leave it to people at chance, there may be some who would be left unattended, some writers against Islam, and there would be some on whom so many people would be wasting energy uselessly.

So what I mean to do is this that I should like all the various countries, where Ahmadiyyat is

Now the orientalists are changing their policy in form alone. What they have decided is this that why to antagonize the Muslim world by calling a so called liar a liar. Call him a truthful person and then start enlarging upon his lies, as they say it. This is a policy. So a change of nomenclature has occurred and nothing else. They call the Holy Qur'an the book of Allah, all right, but then attribute such enormities to this book, such horrible contradictions and so on and so forth, that the reader, after reading only a few pages written by them as commentary on the Holy Qur'an, begins to believe that it is just a hocus-pocus, nothing to do with Allah or any thing which is, nothing to do with those books which are revealed by Allah. So this is the enmity about which you must be conscious now and make conscious efforts to first detect and then pursue, and then to put to flight all these enemies of Islam.

Among your people who are knowledgeable, who are learned, who can understand English very well and who are also some what, if not entirely, well versed, with the values of the Holy Qur'an and Ahmadiyyat, so they should start reading such books and pinpointing the mistakes and elaborating on what has been said against Islam. They should prepare such lists. With the result that afterwards if they are themselves capable of writing some convincing answers, after making some research, they should do it by themselves. But should not leave it entirely to their own efforts. What they
would be in their place? Who would be the person who would guard Islam because Allah has bestowed this responsibility upon us. He has chosen us for this purpose. So, if we leave this responsibility alone, nobody is going to come forward and do it for you. And they are incapable of doing it, because they do not understand the values of Islam as you understand today. Hadrat Masih-e-Ma'ud yas drawn your attention to such keys as open up new avenues for you when you study the Holy Qur'an. He has handed over (to) you such clues as make you understand the Holy Qur'an more easily than the rest of the world. So if you do not defend the values of the Qur'an, nobody else is going to do. This I tell you positively. And this is what is happening at present.

A lot of books on Islam, distorting the teachings of Islam and distorting the figure of Hadrat Muhammad Mustafa ${ }^{\mathrm{K}} \mathrm{W}$ 霓 have come into market and they have not been taken notice of by the Ahmadis, living in that particular country where they are published. For example, here in England I have come across certain books which have not at all been mentioned in our literature but which are full of poison. And the new generation is brought up in that manner.

In fact, the change in the policy, which I have just mentioned, had been brought about because of some political changes; because of the find of oil in the Arab world, because of the rise of Arab wealth.
upon him) as well. But in such departments, as are divorced from religion, in fact, only as a human being they praise you or they praise him for having some exceptional qualities and capabilities of leadership. But that is all deceiving. They remain to be the committed enemies of Islam but, by changing this language and apparent attitude, they are deceiving more people than before.

I was shocked to learn only recently that many Arab students are now sent to British universities to study Islam, to be taught Islam by these so called orientalists. At one university alone there are more than 50 Arab students, studying Islam and whatever is being taught to them, they swallow it with good grace; they swallow it not knowing that it is the same poison which used to be administered before but under a different label. So this situation has changed for the worst, not for the better. But I have seen that there are very few people who are closely following their cause and keeping watch over their activities. So this is the only reason why I have taken up this subject today.

I want to invite the attention of all Ahmadis all over the world, where ever they be, to prove to be those stars which are mentioned in this verse. They are the stars of the new heaven, which has been created by Hadrat Masih-e-Ma'ud 基眺. They are the stars on which depends the defence of Islam today. If they sleep over this, they will not be mindful of their duties to Allah. If they do not guard Islam who
orientalists, we observe, now coming up. But I have noted with minute study that practically, except for the addition of deception, nothing has changed. The same people with same bitterness are attacking Islam. Only the language has softened down and the style has changed and the nomenclature has changed. Previously what they used to call "poison", now they label it as "potion". And no other change has taken place. Previously they used to call Hadrat
 now they say he is not a liar, we don't know what he is. But when they criticise the Holy Qur'an they take pains to prove it positively that the founder of Islam,
 and there was no Allah who spoke to him and he was a very poor author for that matter. They point out defects; in human values, defects in other areas and contradictions and changes and so many things they indulge in, only to prove to a common reader that this book was not only the work of Hadrat Muhammad Mustafa work. What they praise is some thing which is not at all an indication of the Holy Qur'an being from God, e.g. they praise just the language sometimes, and the Muslims are deceived. They think that oh! they are friends of Islam; they have changed their stance and attitude, because they have started praising Hadrat Muhammad Mustafa 繝 occasionally and his language. Some times they come out with great tributes to Hadrat Muhammad Mustafa, (peace be

People have changed; so have Ahmadis but unfortunately they are not behaving as ideally as Ahmadis produced by Hadrat Masih-e-Ma'ud himself. They have fallen in standard in many respects. And this is one respect in which, I so painfully have to admit, that they have fallen much below the standard. The fact is that the enemies of Islam have again become active. From different angles they have started attacking Islam and different gods they address now, of course, but the object of creating doubts, suspicions about Islam is the same object, no change. The malevolent attitude and the inimical stance is the same, only the style has changed a little bit. But Ahmadis all over the world if not all, majority of them, are not mindful of this phenomenon any more. They are not consciously defending the values of Islam as they should be. I refer to a change having taking place not only in Ahmadis but in outside world as well. I want to further elaborate on this observation. Then you'll understand what I mean.

What I mean to say is this that although the enmity of Islam continues to be the same, its form has changed and new garbs and new dresses are been worn by the same enemies. Their policies are changed a little bit, apparently though, but not in fact. The policy has changed a bit, apparently it has softened down, apparently the enemies are less enemies and they are some times talking in terms of friends. This is the new generation of the
strongly, with the result that they were awe-inspiring to the enemies and a time came when the people dared not attack the values of Islam because there were so many guards created in this lowest heaven.

After a while unfortunately, as the Holy Qu'ran had itself predicted, there were changes taking place in this heaven. Stars were torn from their hinges and darkness was replacing light gradually, with the result that ultimately as Hadrat Muhammad Mustafa time of total darkness came and got extended into centuries. Very little light from the heaven was observable during that unfortunate period of dark ages, for the world of Islam. But with the grace of Allah, Hadrat Masih-e-Ma‘ud came. He was raised by Allah Himself and the new heaven for Islam was created. New stars came into being, new system of defence for Islamic values was created and it went into action immediately. But Hadrat Masih-e-Ma‘ud 噱珯 did not wait for the stars to be born. He himself went into action first and, in fact, that process was the process of creation of other stars, like it happened earlier in the time of Hadrat Muhammad Mustafa

The prophets are like suns or like moons. Around them a new heaven is created by their light, in fact, and this is the phenomenon which we observe unfolding again in the time of Hadrat
 water has flown under the bridges of the world.
are the stars then? The same stars as are refered to


(Mishkat ul Masabih, book Almanaqib, chapter Manaqib us Sahabah) My companions are stars whom so ever you follow, you will be rightly guided. So this is the new heaven which is created and this is the new heaven to which the Holy Qur'an refers to, occasionally.

Now what is the quality of this new heaven? The quality of this new heaven, as mentioned here, is this that they are guards over religious values and all that is Godly. After the new heaven is created then the people of the world are not permitted to attack the religious values as they were used to before it. They come upon such guards, such strong guards which pursue them and repel them and put them to flight. And if they are not put to flight they are destroyed totally, because such is the strong system of guarding this heaven that the people of the world have absolutely no play, no say in the matter left any more. This is what has been described in the Holy Qur'an and this is what I want to draw your attention to.
 created a heaven and for a long time to come, we observe in the history of Islam, that very great religious scholars were produced. Even after the companions of the Holy Prophet had left this mortal world, there were people who followed them in their footsteps and defended the values of Islam very
nature nothing has changed；no changes observable in nature．The heaven is the same as it used to be，I mean the apparent heaven．The skies and the stars and their behaviour is exactly alike．But something has changed after the advent of Hadrat Muhammad Mustafa 瓨旡 and a new system is created．So that shows positively that the outward nature is not meant at all in this verse nor in the previous verse．

What is meant is this that when prophets come they create a new heaven，and that heaven is different from the heaven previously known to the people．Before the advent of prophets the men of the world are at liberty to attack religious values；they even attack God．In their perverted minds they create allegations and suspicions and doubts，first in their own minds and then they sow the seeds of suspicions and doubts into other people＇s minds． And this phenomenon goes on unchecked because that heaven is not yet created which is mentioned in the Holy Qur＇an，as the lowest heaven．And those stars have not yet been created which are made guard over the religious values．That heaven，which is mentioned in Hadrat Masih－e－Ma‘ud，$火 火 \in t=0 l$ l＇s words： nya asman aur naye zamin（نيآسمان اور نئ زمين．）

Nya asman（نيآسمان）is the asman（آسمان）or the heaven which is being mentioned in this verse．And that can only be created when prophets appear，not before them，like Surah Jinn has made it manifestly
 and with him was created the new heaven．And who
be interpreted？Is it meant by the Holy Qur＇an to refer to a very special type or unknown type of creation，which is invisible to human eye and which has a power over human affairs as well， occasionally，or something else is meant by this？But I leave this question alone for the time being because that will be making a diversion in another direction．

I＇ll stick myself to the meaning，the true meaning of the verse，which I first recited as illustrated by this second verse．In the second verse Allah tells us that after the advent of Hadrat Muhammad 鯶酸 a party of Jinn．Jinnai came to see him．And they accepted，and they took oath of allegiance at his hands．And when they returned， they started talking between themselves．And this is the talk which is refered to．They say while they go back，they are saying：

＂We tried to reach heavens but we found it fully protected by strong guards وَشُهُبَا and shooting stars．${ }^{\text {² }}$ we used to sit in places to listen and nothing
 listen يَيْدُلَهَ شِهَابَا رَّصَدًا he will find in wait，in ambush， the shooting stars for him＂．

What has happened that the apparent phenomena of nature has totally changed；has been transformed？The only thing that happened is the coming of Hadrat Muhammad Mustafa 緩，while in
regarding the Holy Qur'an, you are trying to come out with excuses. And you tell us that it is just a hidden phenomenon; it is just a spiritual phenomenon; a religious phenomenon and not exactly the phenomenon of nature as we observe it.

What is the answer of such a question, such an allegation? It appears to be rather heavy and Islam must be defended rationally, not through imaginations and through our beliefs alone. Those who understand the style of the Holy Qur'an would further proceed to note that the Holy Qur'an does not require any outside defenders. It can well defend its values and it doesn't need any outside help. Verses of the Holy Qur'an support other verses and make their meaning manifestly clear. So when we say positively that these verses mean to refer to a religious phenomenon and not the apparently natural phenomenon, we must have some proof in the Holy Qur'an itself so that when the attention of man is drawn towards the second type of verses, immediately the allegations fall by themselves.

But the second verse to which I want to draw your attention is after a few Suras; in Surah Jinn. the Holy Qu'ran tells us in that verse of that Surah


It says, in the words of jinnai, and again that word jinn (جن) is a very debatable word; how it should
words of the Holy Qur'an, the lowest heaven, in which lamps are studded and the purpose of those lamps is to repel or drive away Satans. This is what is said in so many words in the verse which I have
 have decorated the lowest heaven with lamps. What
 وَأَعُتَدُنَالَهُمْعَذَابَالسَّحِيُرِ And we have prepared, by way of punishment, for them a blazing fire.

Now apparently this is not what is meant by the Holy Qur'an, because the whole verse, in fact, is applicable not to the apparent world we see but to the hidden world of religion and the religious phenomenon is being revealed thereby, because apparently we don't see any shyatin (شباطين) who are being repelled by shooting stars, nor do we observe lands as such in the heaven. So obviously, according to those who understand the style of the Holy Qur'an, such verses relate to different phenomena altogether.

When we say that some non-Muslims can raise this objection, they can allege that you are putting words into the mouth of the Holy Qur'an because you have reached the stage of knowledge where the world has advanced in science and you think that the verses of the Holy Qur'an are left far behind in time and they are describing the phenomena of nature incorrectly. So, to guard against allegations

## Guarding of New Heaven

## \& our Obligations

(Friday Sermon Delivered on 1-10-82 at Gillingham England)
After tashahhud, ta 'awwudh and recitation of Surah Al-Fatihah Hadur recited:


It is a style of the Holy Qur'an to draw man's attention to the phenomena of nature, but that phenomenon of nature to which the attraction of man is drawn is not an object in itself. Thereby something else is meant. In fact, Allah wants to draw the attention of man towards a different spiritual phenomenon and the phenomena of nature is only to work as an analogy, the study of which would give us more (and) greater opportunity to study the hidden phenomena of (the) spiritual world.

The verse which I have just quoted also is an example; an illustration of what I have just said. Apparently a heaven is described according to the
you can put hands on the person who is sitting before you. So that to establish a sort of bodily contact.

Now bodily contact is not what is meant. What is meant is the spiritual contact. Because this is the same Bai'at which is referred to in the Holy Qur'an as Hablullah (حبل الهّ). You hold Hablullah with the strongest possible power which you have. Now through Bai'at you come to, in contact with Hablullah. So that is a spiritual contact, and why do we ask you to establish also a bodily contact? Not because of superstitions, but because Hadrat
 his habit, he used to do it like this. So we are his followers. It's only I think, a way of symbol. I am establishing the necessity of your contact, by telling you to establish physical contact, what the Holy Prophet meant was that you should try to be near the Khalifah or near whom you are pledging your Bai'at to. Not only physically, but also spiritually much more so. Perhaps that is a symbol, but what ever it is, we do how we found, exactly as we found Hadrat
 is no superstition. So after the Bai‘at we'll say prayer and then انشاءالشَ I'll take leave of you.
to you and trust to Allah that it will carry the weight انشاءالشه تعالي.

During Khutba-e-Thania Hadur said:
After the Jum'ah prayer we'll say 'Asr prayer together with the Jum'ah. I my self and all the rest of those who are on journey, would say half of the 'Asr that is two rak'at (ركعات). Those of you who belong here, they should complete their prayer after that without saying assalam o 'alaikum (السـلام عليكم). But they should not stand up until I finish the second assalam o 'alaikum.

I have observed people behaving hastily, impatiently. While they are not permitted to bow beyond the movements of Imam while the Imam is still locked in prayer, till he says and finishes his second assalam o 'alaikum, the followers have no right to stand up. When Imam is free, then they are free to move. So the prayer of the Imam ends with the second assalam o 'alaikum, not with the first. So you wait until I have finished the second assalam o 'alaikum and then stand up for completing your prayer, that is adding two more rak'ats without assalam o 'alaikum.

After that, Shiekh (Mubarik Ahmad) Sahib has told me that Jama'at wants to renew their pledge of Bai‘at (بيعت). So انثشاءالها for the sake of Jama'at of Scotland we'll go through the ceremony of Bai'at. And Imam of Scotland brother Mr. Bashir Orchard, he would come forward and some of those who can and put their hand touching my hand and the rest of
follow the goal which has been set to them by the holy founder of Islam. This is your station in life; this is your status in the eyes of Allah. So rise to it. Why do you seek ordinary low level of ordinary Asians who come here, lose their values, acquire complexes and get lost themselves.

You are different. Why don't you realize it? This is what hurts me most. Not only the fate of the people around, but when I see Ahmadis behaving like ordinary people, while they are not ordinary people, then it hurts me most, and then I turn to Allah. O Allah! What is the use of my coming here? If I can't turn Ahmadis back to your massage, if I can't make them realize where they belong to. What is the use in my going through the streets of London and Glasgow and Frankfurt and Hamburg? Because then I would be just an ordinary person, doing the same thing as hundreds and millions of visitors do. I have not come here for that purpose and I have no power on the hearts of Ahmadis. It is You alone who has that power. You help me. So, as I am humble in my approach and I only seek Allah's help. You should also be humble in you approach and seek Allah's help for your sake. For the sake of your generations, for the sake of mankind suffering around you. Then you'll see the great signs appearing, great changes appearing انشاءااله تعاللي. And a new Jama'at would be born here in these countries out of your bodies, your souls will emerge and that is the massage of Ahmadiyyat which I deliver
responsibility of converting these people, I who am a nonentity, we are nothing, we have neither any knowledge, nor wealth, no strength enough. How can I do it? But O Lord! I have done it for your sake. I believe in Your mercy, I believe in Your succour and aid. You come to my aid because I was what ever I am, however humble I have been, I have come to Your aid. So all that expect of You is, to come to my aid for this noble goal which I am pursuing for my love for You, for my love for
 my self to Your task, why shouldn't You come to help me?

If you pray to Allah with such pain and such aching hearts, it's impossible for Him not to accept it. Then you will see changes occurring all around you. Then you will see the fate of this country changing gradually and light appearing in the darkness and dispelling darkness all around.

May Allah bless you, may Allah help you! First make this sincere resolution, then act upon it. Then may Allah help you to follow this noble goal perseverantly, not with temporary emotions. We don't want Ahmadis with temporary emotions. It is a long task, we may have to devote a generation after generation or energies towards achievements of this goal. So we don't want people who are tired. Allah and the Holy Quran tell us that there are angels who never tire in praising Allah. So are the followers of

missionaries as you find today; there were no such systems in fact. Just ordinary tradesmen went there and started preaching and they were responsible people.
 any thing unexplained. He explained at length what he meant by Dajjal, he explained at length where he is mentioned in the Holy Qur'an, he explained the philosophy of the institution of Dajjal, he explained where he should be followed and where he should be avoided and where he should be opposed and where he should be aided. So every thing has been made manifest by Hadrat Muhammad Mustafa but, unfortunately, we are not paying attention to his words and this is what I am repeatedly trying to draw your attention to. Allah bless you, may Allah help you but I assure you that, if for the sake of Allah you make this decision today, that from now on, you are going to lead a life of a missionary, if you make this decision today, that for Allah's sake you'll devote all your energies towards converting this country into Islam, then you'll see the great changes appear. All around you people will begin to get converted.

But that can only be done, if you also remain humble, if you also continuously pray to Allah, seek His help, accept you are being nothing. Admit that you have no power on earth whatsoever. And then turn to your Lord repeatedly with tears and with aching hearts. O Allah! I have taken the
achieved here, because there is one gentleman left out who is missing unfortunately. So fifty percent of local Ahmadis are here and that is one! This is (a) shame. This is a point for us to ponder and reflect. What have you been doing here, all of you; young, youth and old and ladies and gentlemen? Who came from Pakistan or some other countries to seek employment here or to do business. That was not the fundamental thing in you.

The most overriding thing in an Ahmadi should be the message of Islam. Don't leave it to the missionaries. They simply can not do it alone. It is you who are going to take up the cajole, otherwise, Islam will remain in this defeated state, as you find it today.

Read the early history of Islam and you'll come to know, that, in fact, it was not a clergy, because there are no such things as clergy in Islam, which brought about the great revolution over the world.

Who converted China? Go to the history of Islam and then you'll find out; not a single missionary was sent to China. I mean those four provinces of China which are predominantly Muslim. The four big provinces who have become almost entirely Muslim, and not a single creature was sent to them by any Muslim ruler. Just tradesmen, those who sought employment as you have sought employment today, they went to China. Who converted Indonesia? Neither a sword nor such
concerned; it could be poison for you, if you follow them. You'll eat poison.

Now this is exactly what the people are doing from the East. This is why Ahmadis are expected, not only to warn the West but also the Eastern people who come over here and indulge in these blunders. And this is what the Ahmadis are not doing in fact.

This is why I have prepared the ground for you to see where you are missing the values which are expected of you, most unfortunate. In fact you came here, to the West, not only in your personal capacities. But in the capacity much more so, in the capacity of ambassadors of Islam and the
 you don't understand his religion, if you don't follow his path and you don't exhibit the way of life through your own personal example, how can you be named the ambassadors of Islam and representatives of Hadrat Muhammad Mustafa 䚪? You are so dormant to these things, in fact in some respect, that it deeply hurts me to notice that in many respects we are losing ground to the West, rather than gaining ground.

As far as our rate of preaching is concerned, that is almost zero in Scotland. I made thorough inquiry here about how many Ahmadis today are present here who belong to this soil, so that for their sake, I should address you in English, and I was told just one lady. And that is fifty percent of all we have
 as much as their sciences are concerned, their study of nature is concerned, you should not only follow them, you should try to excel them. No harm in that. Because they are not the creators. It's the creation of Allah which they have rightly understood. But in all the other values you must completely abandon them and not follow their path.

What I see here is quite a different pattern altogether, in fact it's the converse of this.

Most of the Asians who come over to these countries they don't follow them in their good nesses, but they follow them in their wrongs. They lose their way of life. They lose their moral values. They lose their religion. They lose all that is good in them and start following the western pattern of the rotten society. While they were forewarned by
 ago. How clear was his vision! How beautiful the message! Here they are wrong. Don't just condemn them wrongly and revolt against all the Westerns. This is what he said in his message.

Choose the right thing from wrong. And I'll give you the criterion, unfailing criterion which would never lead you to a wrong decision. That on the right things, they are always wrong; on the left things, they are always right. Follow them materialistically. Learn from them and try to excel them (-) no harm. But whenever there are the moral values, religious values, ethical values are
complex we are strengthened in our faith, we realize that although there are wise people but fourteen
 had seen through them. He had warned us that they would materialistically become extremely advanced, yet you must not follow them in their ethical values, in their religious values, and all the values which are termed good in Islam because there they would be a blind people. If you follow them there you'll be destroyed yourself.

This is the message which I want to make clear now to you that this should be our approach to the West. What a great prophet he was! Where he saw light, he admitted it in so many words. Where he saw goodness he admitted in so many words. Where he saw badness he warned us against that bad and evil feature. And this is our approach too. I mean we can't follow a different approach from the master.

Now here we are making mistakes. I am talking about that society which has migrated from the East to the West by not understanding the
 are following an entirely different course from what he advised. He advised us that you can trust their vision as far as material world goes; you can copy their pursuits because there is no harm in studying the nature of Allah. It was the creation of Allah, not their own creation. Their vision is correct. This verdict has been given by Hadrat Muhammad
admits أَنَهُمُيُحْسِنُوْنِ صُنْعًا means that their industry would be so wonderful that when they would look at their products they'd say, look here, how beautifully they've made them. We can manufacture such beautiful things. So all over Europe you'll see the same things.

They've excelled in industry, and this is what the Holy Quran tells and at the same time that Dajjal becomes manifestly clear to us. He is the same Dajjal which was talked about by Hadrat Mhammad
 religious values are concerned they don't see the logic of the things. They say three is one and one is three. God begets children, physical beings. It's impossible. How absurd it is! Yet their logic immediately goes to sleep when they begin to realize religion. They don't see anything at all there, in fact. This is why they are called "blind". And the moment their eyes turn towards the materialistic things their vision becomes so bright and clear, so illuminated that we look at them with wonder. How they could perceive those things while we also live the same universe, we also pass through the same natural phenomenon. But we miss the point while they have picked at the right points and made advancements because of the correct study of nature.

So this dilemma is solved by Hadrat
 it gives us hope too. Instead of giving us inferiority
that they would become successful, then they are totally wrong in that.

Further it says these are the people who have turned all their attentions, all their energies, all their powers towards materialism:


Now this is the verse to which I want to attract your attention, in particular. This is a tell-tale verse. It tells us that these are the people whose faith is Christianity, whose religion is Christianity, but who would have made such advancements in material pursuits
وَهُمْ يَحْسَبُوْتِهَنَّهُمْيُحُسِنُوْتِ صُنْعًا)(Al-Kahf:105 (
that they would think that they have achieved the very best in life, that means to say, that not only their entire energies and capabilities would be directed towards materialistic pursuits, but also they would have gained so much by that pursuit that they would believe that they have done the very best in life. What best could there be other than this?

Now this is exactly the situation which we find today when we are travelling in Europe. They have excelled in the pursuit of materialism. They have gone to such stages as is unimaginable for poor people of Pakistan or India or other backward countries to achieve even in after hundred years. They've gone so far ahead of us. And by the pursuit of materialism they've come out with beautiful things as well as the Holy Qur'an himself self
clear that whatever the future Christians would gain by way of the materialistic advancements would be in fact because of their early forefathers' good deeds. It is a reward not for their own sake, but for the sake of those early Christians who offered so much for the sake of Allah, that they are reaping this reward of great achievements in the world. Now that is a different subject altogether, but those were not
 himself to the only first ten verses. Because the account which relates to the great early Christians who part of whom we called Ashab-e-kahf (اصحاب كهف); people of the cave, are exempt from this warning. They are, in fact, narrated in the Holy Qur'an with great love and regard. So we leave them alone for the time being and go to the last ten verses. What do we find there?


Those who have denied the message of the Holy Prophet, who refused to believe in him, do they think, are they working under the misconception that they will ultimately become successful. By doing what? By making Allah's creatures by treating Allah's creatures as his
 they start making partners, calling partners besides Allah from among Allah's creatures. If they think
concocting and attributing a false son to Him, while He has no son.


So this Holy Prophet of Allah has come to warn you and warn those in particular who are Christians, who have invented by themselves imaginatively a son to Allah. And they attribute that imaginary being to Allah and say He has a son. Neither they have any knowledge, nor their forefathers had any knowledge, they are just talking nonsense, out of their hats, as they say in English.
 would be taken very seriously by Allah because it is an affront to Him. So they are going to be punished for that.

These are the verses which make very clear the religion of Dajjal that what ever power that being, that power is going to be Christian and Christian of that stage in future which would become almost entirely idolaters. Now after this there is diversion after a few verses and distorted shape of Christianity is left alone and then Allah turns to their count of, those are the Christians who were God-fearing and who offered great sacrifices for the sake of Allah, went to the caves for the sake of saving their religion from their opponents. Those were the other people then mentioned. And it is made explicitly
 says from his Lord and nothing from himself, then there must be some reference of this in the Holy Quran.

Now, that Surah in which Dajjal has been mentioned has been pointed out by Hadrat Muhammad Mustafa 䨍氮 himself. When he warned his people; his followers against the appearance of Dajjal, he was asked by one of them: how could they be saved from the horror and the damage of such a havoc? So he said the only way out is that you recite first ten verses of Surah Al-Kahf before retiring and also the last ten verses of Surah Al-Kahf.

Now, what he meant was obviously that, that Dajjal has been described here in detail. If you understand the meaning of first ten verses and final ten verses of Surah Al-Kahf, then you will recognize your enemy and once you recognize your enemy and the direction of attack, then it is only possible for you to take defensive measure to guard yourself against the enemy. As long as you do not know where the enemy is and where he will attack from, from which direction he is going to come upon you. You are naturally not be able to defend yourself. So he is pointing out very positively what the enemy is? And what he should be guarded against?

The first ten verses of the Surah Al-Kahf refer to Christianity and the warning is specifically given to Christianity. That Allah warns you against

So this is one end as far as the worldly affairs go, they have invented highly sophisticated weapon system; so sophisticated and so deadly that once they decide to use such weapons against the mankind, there is every possibility that the species of mankind would be destroyed and wiped out from large areas of the world. All this because of their very exceptional eye-sight regarding the material world and the laws of nature. Very penetrating eyes have been granted to them by Allah. And this is what was foretold.

Now these traditions who depict the future power of Christianity are not sayings which Hadrat
 was his habit and custom and a very strict custom for that matter that he would utter not a single word from himself. All that he said was from Allah or was by way of interpretation of the Holy Qur'an. And this is exactly what has been mentioned as well in the Holy Qur'an itself:

وَمَاينَطِقُقُعْنِ الْهَوْى
Look at My prophet Muhammad Mustafa, he does not utter a single word from himself. All that he says is based on the Holy Quran. So such is the prophet addressing us and telling us that there is going to be a Dajjal or Antichrist. What ever you call him.

Where is he mentioned in the Holy Quran that is the question, which comes to ones mind if Hadrat
why he considers the Western Christian civilization and their religion to be the representative of this tradition, fulfilment of this tradition of the Holy Prophet 䨍。

Now secondly, as I have mentioned earlier as far as the worldly matters go, they are so much advanced. They have achieved such high standards of precise and correct wheel that it is surprising for the rest of the world. They lead all movements which can be called materialistic movements in philosophy, in science, in sociology, in all other aspects of life which concern man, but which are not religious and which are not moral, which are not Godly, the western society leads the entire mankind. The same people who are completely blind to the values of the Creator, their submission to Him, their obligations to Him, are so well advanced in science that now they are virtually talking, literally talking with the heavens above, as we call it why I use this word talking because in Urdu we say asman sei batein karna (اسمان سباتّي كرنا). It means one attains such heights as if he is by that by reaching those heights, he is able to really talk to the heavenly bodies. And this is what exactly they have done. When they first put their feet on the surface of the moon they addressed that moon and they addressed the heavenly bodies in such pride that now we have reached this. And they have started searching for other places in space to achieve even greater heights.
earth hidden below billions of tons of earth. It will be such (a) penetrating eye.

Now this is a very interesting depiction of the future Dajjal as we understand it to be as a future of Christian nations which are going to dominate the whole world. When I came to Europe and even before that I have observed this that Hadrat Muhammad Mustafa ${ }^{2}$ 鳡 better phrase than the word a'war for the characteristics of the western people. They are in fact highly intelligent and very deep sighted and very queer sighted as far as the worldly matters go. And you must bear in mind that while interpreting dreams we are told that if you see left side of a person that indicates the world or materialism. If you see the right side of a person that indicates spiritualism. So, by explaining that his right eye would be blind what he meant was that, that people however great they are apparently be, they would be blind to all that is good because righteousness stands for goodness in interpretation of Muslim way of interpretation of dreams. So all that stands for goodness, righteousness, spiritualism, religious or Godly things would not be perceived by that Dajjal which as I have explained, has been manifested in the form of the Western civilization or Christian dominance of the world. So when ever I say Dajjal it should be understood as such. I don't have to explain every time what I mean by word Dajjal because Hadrat Masih-e-Ma‘ud yas at length explained

The prophecy which I've just referred to is the prophecy about the coming of Dajjal (دجال) .
 the time would come in latter days when a great havoc for the world would be born, under the style of Dajjal, which is the word translated as Antichrist in English. Whether it carries the full connotation of the word Dajjal or not, I don't know. But I am inclined to believe that it does not carry the full connotation of the word Dajjal, because it is a much deeper and richer word in meaning, for just Antichrist would not be able to carry all the messages which are sort of packed, very closely packed in the word Dajjal

Now this is a very great prophecy and also a lengthy prophecy which covers so many aspects of the future world. If I begin to speak on all these aspects it would take me a very very long time. So I am going to limit myself strictly to only one single
 depict the attributes of Dajjal.

It says he will be a‘war,(اعور), that is, oneeyed. Now in connection of his one eye, he further explains that his right eye would be blind; so totally blind that there won't even be the realization of its shadowing light in that eye, to be totally blind. The other one, on the other hand, would be very deep sighted and far sighted and so clear and so prominent that if that eye would be able to penetrate the depths of earth and find out the secrets of the

## Responsibilities of Ahmadis in

## Western Society

(Friday Sermon Delivered on 24-9-1982 at Glasgow, Scotland)
Before delivering the khutba Hadur said "is there someone among you or in ladies who doesn't understand Urdu at all. She (there) is an Ahmadi who belongs to Scotland. So I shall address this congregation in English. Because it is her first chance to attend this Juти'ah led by Khalifatul Masih. So I will address you in English today so that she should also be with us".

After tashahhud, ta'awwudh and recitation of Surah Al-Fatihah Hadur said:

During my tour of Europe I have found the fulfilment of the prophecy of Hadrat Muhammad as such a great extent, in such detail covering every aspect of life of the western nations, that I'm only compelled to say a few words on this experience.


If there is one gentleman by the name of Steel, whom I promised that I'll give him opportunity to come closer and touch my hand at time of Bai'at, he should please step forward. Mr. Steel; a young man, student of University here, he bowed to me that he wants to become a Muslim. But also he expressed desire that I should give him opportunity to touch me during Bai'at. Because I made a promise to him, so if he is here, he can come forward please, otherwise I think my letter may not have reached him in time. (Where ever you stand, put your hand and there is no more here)




 ; ;


good memories behind, such memories that people should remember you with love and tenderness in their prayers and should like you to repeat their visits; not that they should wish to Allah that they'll never come again; not that they should pray that I may not encounter such a person again. And also a name if it is defiled, related to Hadrat Masih-eMa'ud must not happen. So please help me in doing this. Your love of Masih-e-Ma'ud demands this discipline. You help the relatives of Masih-e-Ma‘ud xatall behave like this, not through discourtesy but through firmness and discipline and correct behaviour and correct word of admonishing. This is how you will express the best of love which you cherish, to Hadrat Masih-e-Ma'ud Not the other way round.

So may Allah help us to discharge our duties and may Allah reward you all. The Ahmadis of London, to undergo such hardships for the sake of visitors, only because they are brothers in Islam, they are followers of Masih-e-Ma'ud of your love for Ahmadiyyat you are undergoing all this struggle. May Allah bless you and may Allah reward you! Assalam o 'alaikum.
impetus to the people to take a higher jump in the future. So this is why I am paying more attention to these things because I know for the creation of health this is highly important. If you are suffering from a headache, this is a small thing, not a disease which kills you more often, I mean very rarely one gets killed by headache but then it is a sign of some deeper disease. I am talking of normal headache, but a small headache can ill dispose some person in a manner that all the pleasures of his life are taken away from him. He can't enjoy his food; he can't enjoy his company; he can't enjoy any thing which ordinary human beings would ordinarily enjoy so much. So this is what ill health is. It takes the desire from you to go forward and lead your normal life. So if the community suffers from ill health, however small the disease be, these diseases must be cured because ultimately such diseased people cannot travel towards their goals with as robust and healthier steps as they should normally.

May Allah bless you all, may Allah remind those who are coming here to fulfil their responsibilities and may Allah give them strength to fulfil their responsibilities. It's far better to lead a life of simplicity, being deprived of such pleasures of shopping and luxurious things as are available to any other. Much easier, much better and in the long run a much happier course to follow than that of buying things at others' expense, enjoying life at others' expense and leave a cursed name behind. Leave
call inhuman behaviour. So it must not happen. If after this warning some body is defrauded or somebody is deprived of his rightful earning, then it is his own responsibility. Then he loses the right to discuss such a thing in public because I have given him warning.

And secondly if after consulting me Sheikh Sahib permits someone to offer a loan to any visitor, then it'll be my personal responsibility I assure you, I'll pay it back if somebody doesn't keep his promise. So that is fair enough deal, quite straightforward and honest. So you behave like straightforward honest people and nothing will انثـاءالنه تعالى go wrong with you or with the community's affairs in the long run. That is highly important. These small things are not small. This is what is in fact most important in the making of a community. Clean, neat dealings, simple easy life, reliable words. These are the features which make a community or unmake it when (and) if ignored. And I hope that by paying attention to these small things انثاءالهُ تعالى we'll gain a status where you'll be fit for taking the next jump towards the higher steps to which we are ultimately going انثاءاءاله تعالى.

That gives you help, that gives you readiness, a clean society, a normal way of life, a simple way of life where truth is honoured where words are honoured, where one knows that I am being cared for by others, not that I'll be deprived of my rightful earnings. So these things give confidence and more
necessary he would consult me otherwise it will be his responsibility. He'll be answerable before me if any mishap then follows. You, perhaps think that it is a small affair; it is not a small affair; it's a very big affair and the result and effects are wide spread and they are talked about and they injure not only the name of Hadrat Masih-e-Ma'ud yextel unduly but it injures the standard of devoutness of each Ahmadi who comes across such things. They spread abroad. They are given free publicity, though partly in hushed tones, may be somewhere in louder tones, some where else but such things are made subject of discussion. I know that, and as a whole it brings down the standard of the community and its devotion and its very act of sacrifices. So how can I call it a small thing? It's a very big thing.

If Sheikh Sahib consults me about such deals because they happen. It's not inhuman, immoral or unislamic to be in need of some money temporarily;
 borrow money but what is obnoxious is not to pay back in time while you can. You remain sticking to your old standard of your life and forget about your responsibilities to others. Why should somebody earn for you? Why should he put in hard labour for your sake? It's not an easy life here, I know. They have to earn money through blood and toil and sweat, and some body else comes and softly asks him for a small amount or a big amount and disappears with it. That is shocking. That is what I

Masih-e-Ma‘ud and behaves in this manner because then the reflections do not end there, they go beyond and the name of my beloved Imam, Hadrat Masih-e-Ma'ud rexedell is also taken in such behaviour, although not meaningfully to attack him but, through the reflection, of course, his name is injured and that is what hurts me the most.

So particularly I warn those belonging to Hadrat Masih-e-Ma'ud's family to behave properly, not only to behave properly with equity and justice but also realize their status. The flow of beneficence is accepted to be from their direction to other direction, not the vice versa. This is where their honour lies. This is what is expected of them if they are related truly to Hadrat Masih-e-Ma'ud x didyl, with a double bondage but if they don't pay heed to it they'll be answerable to Allah, and I inform you, all of you, not to extend any undue kindness, not to grant to their demands from now on except by the permission of your Amir. I am doing it because I know that in the past some misbehaviour has got bad name to the family and to late Hadrat Khalifa tul Masih Thalith (III) and such incidents so deeply hurt me because they hurt the name of Masih-e-Ma‘ud tolerated.

So I bind you not to give any loan to any member, particularly belonging to Masih-e-Ma'ud xedell, his family, without prior permission of the Imam, Sheikh Mubarak Ahmad Sahib. If he deems it
apparently a short-lived problem, it's not a shortlived problem. It is going to injure the cause of Ahmadiyyat in the long run, if we do not pay attention to these small things. But more than that it has also been brought to my notice that some people borrow money, with promises of returning the money shortly after they return, but their shortness gets extended like their visit here. Instead of a few days or weeks it gets extended into months and years some times. This is a shame. This is what I call enormity. This must not be tolerated. This is paying them back in a very bad coin, to say the least.

So I warn all the visitors to behave correctly. If they cannot give them any reward, and no reward is expected by their hosts, at least they should behave like human beings; they should behave like gentlemen; much more so we should behave like Muslims, like the followers of Holy Prophet of Islam, Muhammad (peace be upon him). This is what I expect of them; not to fall below the human level. That is a shame and this is what I call falling below the human level, to draw the best benefit of somebody's hospitality and then asking him for some money because he's short of money. This exchange problem and this and that and telephones and so on and so forth and then forgetting about it; not to pay it. It becomes a very great crime if such a thing is done by some body who is related to Hadrat Masih-e-Ma'ud ydeded. And it particularly hurts me to think that any one related to Hadrat
and they must see to it that they fulfil the responsibilities which fall to their lot. So the guests also have responsibilities. They must see to it that they are properly fulfilled. They must not be a burden. They must not trespass upon the hospitality of a kind gentleman and if they forget this, they will create many problems for the future of the Jama'at, as such, because this organization of this tradition of Ahmadis, visiting other places for the sake of Allah, is not a short-lived affair. It's not a transient phase; it is to be with us for ever and for ever. So we must not injure this best tradition of hospitality by taking undue advantage of people's kindness. That must be kept in mind. But I have other things to say and remind those who come here.

It has been reported, particularly about three months ago. Just by chance it was reported to me by some one, who had visited London, that although the majority of those who are hospitable, who offer sacrifices, who are forwarding the community they are at silent work, they don't give voice to their complaints. Yet there is a minor local community in London which gives voice to their complaints with a greater vengeance and they start talking about such misbehaviour of visitors and so on and so forth, which brings shame to the countries of their origin. So this is why I have taken up this matter. Although apparently it pertains only to London but it is by addressing you, in fact I am indirectly addressing the whole community out there. I have told you: though
class servants are available to do the washing etc after the food, if not for the cooking, at least. So there are many problems attached to this way of life, and keeping them in view, their hospitality (becomes) achieves their greater status and we must (be), in proportion to that, be more thankful to them.

Although in Islam the traditional concept of a guest is for three days at the sunset of the third day or let's extend it to the sunrise of the fourth day, the normal tradition, all responsibilities of the hospitality end, but in the case of London Jama'at it is extended to some times two weeks because people who come from Pakistan or some other foreign countries they think that the money they have spent on fare is not well paid, not paid back if they return after a few days. So naturally, because of that and because of their desire to see England, they have to extend their visits, with the result that some times three days get extended to three weeks and still the local people cope with that and some times weeks get extended into months and, instead of the sunrise of the fourth day, new moon of the fourth month still finds the guests well entrenched in their houses.

And yet as I have told you and I feel, they show immense patience to them and they show immense kindness. They suffer a lot at their hands and they don't utter a word of complaint. But it should be kept in mind by those who visit here that Islamic concept of good conduct is not a one-way traffic. Both the parties have their responsibilities
shame if one does not learn his own mother tongue. It's a case of a complex; they call inferiority complex. So Ahmadis are expected to rise above these things. Their pride lies elsewhere, not in such small things. So, I hope in future local community would take care of it that all boys and girls, born of Pakistani parents, are made to learn Urdu properly and well in addition to ordinary knowledge of Urdu they should be given a background knowledge of Urdu literature as well, and again they must be well-versed in the literature of Hadrat Masih-e-
 this.

Now I come to the question, which is of temporary importance but still it needs to be mentioned, that we begin first by expressing the deep sense of gratitude to the local London community, who have offered their homes in a great spirit of Islamic hospitality to all the visitors, who have come from abroad. They are taking care of them, despite the fact that the houses are generally small here and, according to the local customs, there are not many baths and toilets. So they have to undergo some real hardship entertaining particularly those who are not related to them. For their sake they'll have to face some difficulties and problems because in a family if you have some guests then your relationship, naturally toilets cause a main problem. Apart from that they have no servants, while in many eastern countries even to the middle

## Hospitality of Jama'at England and

## Valuable Exhortations to Visitors

(Friday Sermon delivered on 17.9.1982 at Fazl Mosque London)

After tashahhud, ta 'awwudh, and recitation of Surah Al- Fatihah Hadur said:

Though not accustomed to address such gathering in English but for the sake of those natives and some of the visitors abroad who cannot understand Urdu, I have elected this day to address you in English.

Also I have in mind those children, though born of Pakistani parents but unfortunately they have chosen to remain ignorant of their mother tongue; to that extent at least, that they cannot follow ordinary speeches delivered in Urdu. And again more unfortunately so, they some time take pride in this, while this is a fact, of which one should be ashamed. There is no pride in not knowing any thing, least Urdu or any other language. But it is a question of

# English Text <br> of <br> Friday Sermons 

اشار

## 

|  |  |
| :---: | :---: |
| 33 .......................... | 4 ....) |
|  | 12 |
|  | 14 |
|  | 14 |
| 36 ....) | 17 |
| 39 …… | 18 |
| 39 -...an | 18 ...) |
| 40 -...ana | 22 ...) |
| 43 | 22 .... |
| $45$ | 24 |
|  |  |
| 46 |  |
| 55 .... |  |
|  | 29 |
| 60 … | 31. |
|  | 32 |


| $\mid$ |  |
| :---: | :---: |
| آربت | T |
|  | آزت |
| 310............................. |  |
|  | $272,271,269,239,224,189,188,81,23$. <br> 271 $\qquad$ <br>  |
| الانا اوليا الله لا خوف عليههم ولاهم | i |
| 126.............................) |  |
| الا يذ كر الله تطمئن القلوب(الرعد:19)........294 <br> الرحمن ـ علم القران ـ خلق الانسان ـ علمه | 271...................................... |
| 236........................... البيان (الرحمن : |  |
| اتبع ماوحى اليكّ من ربك ............... |  |
| 99...................) | 249.......... |
|  |  |
|  | 249.......................................... |
| اعلمو النمالحيوة الدنيا............لها | آزاوى |
| 215............) |  |
|  | 300....................................6try |
|  | з00................................... |
|  |  |
| 204................................) |  |
| 235.............. | آسمرّ. |
|  | 310..........................1 |
|  |  |
|  |  |
|  |  |

تقشعرمنه جلو دالذين يخشون 316. ربهم (الزمر: تلك الايام نداولهابين الناس 205 $\qquad$
 حكما من اهله و حكما من اهلها 275 $\qquad$ (النساء: :
خذو ازيتكم عند كل مسجد 287 $\qquad$
ذلك فضل الله يوتيه من يشاءو الله ذو الفضل 226 العظيم (الجمعه:ه).................................. ذلكلم الله ربكم .........وما اناعليكم 94,91 $\qquad$
 رب انى لما انزلت الى من 300,299 خير فقير (القصص:هم) ربنا ولا تحملنامالا 306. $\qquad$ طاقة لنابه (البقره:") سابقو الى مغفرة من ربكم وجنة عرضها كعرض 226. $\qquad$ السماءوالارض (الحديد:Y). 73 $\qquad$ سحر مستمر (القمر:؟). سخر لكم مافى السموت وما فى الارض 82. $\qquad$
فالق الاصباح و جعل اليل سكناوا الشمس
204 والقمرحسبانا(الانعام:94). فان مع العسريسرا_ان مع العسريسرا 65 (الانشراح: : فتراه مصفراثم يكون حطاما (الحديد: ابَ)... فذ كران نفعت الذكرى (الاعلى: • ).......... 323 فلا اقسم بمو اقع النجومـ وانه لقسم لوتعلمون 12. $\qquad$ فلا تز كو انفسكم هوا اعلم بمن اتتى 82 ... (النجم: :

الذين ينفقون فى السرآءوالكظمين الغيظ و العافين عن الناس
127. (آل عمران :هזا).

ومما رزقنهم الم ـ ذلك الكتاب لاريب فيه

37 ينفقون (البقره:r-r_).

125 اليس الله بكاف عبده (الزمر<ـ) ان الصلوة تنهى عن الفحشاء

280 والمنكر (العنكبوت تب) ان الله اشترى من المو منين انغسهم وامو الهم 314,313 بان لهم الجنة (التوبه: 11 1).

ذلكم الله فانى $\qquad$ ان الله فالق الحب والنوى 202,93. توفكون (الانعام :979).

واذآارادالله بقوم سوء $\qquad$ ان الله لايغير 205. فلامردله (الرعد:ז I).

ان اكرمكم عند الله اتقاكم(الحجرات:" الما....225 ان تستغغر لهم سبعين مرة فلن يغغر الله لهم
ذلك بانهم كفرو ابالله ورسوله(التوبه: • ).......54 اناجعلنا ماعلى الارض .........وهى ءلنامن امرنا 103. رشدا(الكهف:N•111 (11)

انذرعشيرتك الاقربين (الشعراء:ها٪).............. 197
انه كان ظلوما جهو لا (الاحزاب:H 70 (7)........... . $\qquad$ اهدنا الصراط المستقيم

237,232 (الفاتحه :C-4).

بالمومنين رؤف رحيم (التوبه:1 با (1)............
بسم الله الرحمن الرحيم (الفاتحه : )........... 236
بل الانسان على نغسه بصيرة
15 ولاالقى معاذيره (القيامة 1هاب)

73 $\qquad$ بل هو شاعر (الانبياء: 7)

تتجا فى جنو بهم ..................ومما رزقنهم ينغقون
67.
(السجده:14).
139
تزدرى اعينكم (هو د:Y٪).

وان المساجد لله فلا تد عوامع الله احدا 184 $\qquad$ (الجن:9) 1 ) وانا لمسنا السماء فو جد نها ملئت 181 $\qquad$ حرساشديد اوشهبا(الجن:9). وما ارسلنك الا رحمة للعالمين 281 $\qquad$ (الانبياء:^• • ). و كان يامر اهله بالصلوةو الز كوة 121 (مريم:با) 299 $\qquad$ وادخخلى جنتى (الفجر: آ آ). و اذاانعمنا على الانسان اعرض ونا بجانبه واذا مسه الشر كان يؤ ساـ قل كل يعمل على شا كلته فربكم اعلم بمن هو اهدى سبيلا 203,31 (بنى اسرائيل:

و كان عند
و اذكرفى الكتاب اسمعيل
279 $\qquad$
 و اذاسالك عبادى عنى فانى قريب
50,47 $\qquad$
والاذين يقولون ربنا هب..............اجعلناللمتقين 21 $\qquad$ و العضر ـ ان الانسان لفى خسر 291 $\qquad$ 145 $\qquad$ و الله الغنى و انتم الفقرآء (محمد:9 9 )
.انه كان حليما $\qquad$ وان من شيئى الايسبح بحمده
92. غفور ا_(بنى اسرائيل:Q'ه). وانا لمسنا المساء فو جد نها ملئت حرسا شديد او شهبا........فمن يستمع الان يجدله 183,173 $\qquad$ شهابارصدا(الجن:9-• ) والله يحب $\qquad$ وسارعو الى مغفرة
 وعد الله الذين امنوامنكمموعملوا

56,4,3 $\qquad$ الصلحت (النور :(DY)
14.

فلا تقل لهما اف(بنى اسرائيل: :" (r).................. فويل للمصلين ....................و يمنعون
282. الماعون(الماعون :ه_L).

271 $\qquad$ فى الاخرةعذاب شديد (الحديد: آ). رماناعليكم $\qquad$ قد جائكم بصائر من ربكم 96 $\qquad$ بحفيظ(الانعام :ه•) .ه

قل اعوذبرب الفلق ...ومن شرحاسداذا
208-201
حسد(الفلق).
قل لاتمنواعلى اسلامكم (الحجرات :م ا)...313 قل من حرم زينة الله التى..........يوم القيمة 188,81 $\qquad$ (الاعراف : كان صادق الوعد........و كان عندربه 284 مرضيا(مريم:هـهـ) كنتم خير امة اخرجت للناس 25 (1آل عمران:11)

لنن شكرتم لازيد نكم (ابراهيم:^)......... 361,57 الـر لاتدر كه الابصار وهو يدرك الابصارو

95
 لاتبطلو اصدقتكم بالمن والاذى

62 $\qquad$ (البقره : (Ma).

75 $\qquad$ لباس التقوى ذلك خير (الاعراف : KL)

75 $\qquad$ لباس الجوع(النحل :٪ (1). لن تنا لو البرحتى تنفقوا

141,62 $\qquad$ مماتحبون(آل عمران:ج9) 9 . لن ينال الله لحومها ولا دما ؤ ها ولكن يناله

43 $\qquad$ التقوى منـمب(الحج:N^)

ليظهره على الذين كله(التوبة:بץ)................. 233 $\qquad$ مالك يوم الدين (الفاتحه: ٪) وامر اهلك بالصلوةو اصطبرعليها

122
(
49 $\qquad$ وان الله بما تعلمون خير (لقمان : • ب)...
يخادعون الله والذين امنو اومايخدعون الا 63. $\qquad$ انفسهم وما يشعرون(البقره:•1). يدعون ربهم خوفا وطمعاوممارزقنهم 297 $\qquad$ ينفقون(السجدة:1ا).
يضع عنهم اصرهم (الاعراف:101).......306,273


 يوم لا تملك نفس لنفس شينا 233. والامر يومئذلله (الانفطار: • - .).................... 1
| ابتل|
 348...................................... 22,3 حمتابرابيمعلييالسام حمتالوبرصرتّ رضن السّعن...........34


 35. $\qquad$
 114,113. الوْ ال................................... 113.


 252. چنرةكهوايا.

ولا يحيطون بشيئى من علمه الا بما شاء
210. (البقره:1)

ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلنا رجوما لشيطين واعتدنالهم عذاب
171. السعير(الملك:7).

وما ينطق عن الهوى ـ ان هو الا وحى
160 يو حى(النجم:ه-1)

وهو الذى انزل من السماء ماء فاخر جنابه
97. نبات كل شيئى (الانعام : . . 1).

ويجعل لكم نور اتمشو ن به (الحديد: 9 ب)........ وينذر الذين قالو ااتحذ الله ولدا_مالهم به من
علم ولالابائهم (الكهن:ه-16). 160..................
هانتم هولاء تدعون .....ثم لا يكونوا
59 امثالكم(محمد: 9 )
هل من مزيد (ق:
 هو الله الذى لا اله الاهو ......هو الرحمن الرحيم

1,9,15 $\qquad$ (الحشر:Y)

يا كلون فى بطونهم نارا(النساء: 1 1)............ 270
يايتهاالنفسالمطمتة .....وادخلى جنتى
294. (الفجر: (ا_

341 (الاحزاب:الا يايها الذين امنو اان تتقو اللله
26. $\qquad$ يجعل لكم فرقانا(الانفال: • ־)... يابنى ادم خذو ازينتكم عند كل مسجد
83 (الاعراف:Yץ).

328
(الجمعه: • )
265
يتلو اعليهم ايته ويز كهيم (الجمعة:٪)....................


363. $\qquad$ اخلاص عنْون

343. $\qquad$
عا
$\qquad$


132,131 $\qquad$ استحمال



 164,163.............................

 350................................................ 4
 132,131................ تبا 189..............

اوب 44..........


$234,233,177,175,174$
234.............

175,159,94,12,11..............................
234............

234,233,210,175,150,116,94,11..سورج


343. $\qquad$ L احرار

251............................................ 163,149,78. $\qquad$ احسانكّز كا

78 $\qquad$
 احصان

307. $\qquad$ احانـانـ

 100..............

228. $\qquad$ اول سـغغلوبٌوجا تبي.

 178.................
 اسلام ع,


 175.

 165.

ب
 267...............بح

199........................



اروو
$306,185,159,157,156,150,149,45,44$
309,307
اروواكى اورناب 149 $\qquad$ ازرورا.كزنیگ 276. $\qquad$ 276 .................................. استصال
 239 اشتزاكيتـنجمليا 239


استعحراو
35. $\qquad$ استعدراو س/استفارهكمثل اسلام $102,100,99,68,47,39,28,27,25,20,7$ 137,134,132,123,121,117,111,104 165,163,156,153,151,150,147,143,142

188,186,186-175,172,167,166
252,245,244,230,227,212,199,191
$313,312,309,275,273,266,255$
$362,361,359,342,326,317,315$
368,366-364

143.

لزول سـآثناكيا

177. بنيا, بي.

واجعلنا للمتقين امامابياساسافثز بيتيارتثّث
23. $\qquad$ كا كيا


286... $\qquad$ نمازين
حمتالمعمل علياسلام

121. $\qquad$

حـ
363. $\qquad$ با
 368.........
 82. كيثيتغ 239,44 $\qquad$ اشثّ اكيت
 219. $\qquad$ كرت بـ
 239. $\qquad$ يّاشثراكيت نجمليا اصابالصف
 اp 306. $\qquad$ امر عثّن اوراصراورّلبينزت
 180...............

188. $\qquad$ وريانت

176. $\qquad$ انراز
 266.......
 188. $\qquad$

 309. $\qquad$ \% \%
 177. $\qquad$ سَّ
 350. $\qquad$
 244.........................................466

 176. $\qquad$ ،ور بِ بي
 اسلام|ورلمروارى
 150. $\qquad$ اسلام|ورُمماننوازن
 267. $\qquad$

 273........

199. $\qquad$ ووتر ع6>>يلو

193,192,191,190,185,159,100,56,26,14

$\qquad$

192. $\qquad$ <
צب; 190.......



اطمدّانثق
607...........................................
298................................ن

اوتمال



278. $\qquad$


269. $\qquad$ اسوهحنْ
پّا
268. $\qquad$ قامُ ،و6.

349. $\qquad$

277,267. $\qquad$ كرنَّ
 278. $\qquad$


274. $\qquad$

269. $\qquad$ \%
197... $\qquad$


 274...................................2 270........................ 269............. مها ثم كمامفا 146...................................6
 268.....................


ل(s)
 280
 191 ا; اقْصاوكانظام
 315............................................ 4 \%

اقرار
 24 " (1)
 348 جانَّيزّي بي . اله 296. الهـ


216,213-202,199-151,148-91,88-1 278,273-270,268,260-225,220,217 350,349,345-323,320-292,289-280 369-359,357,356,354,351

 101................................... أكَ
 196.

 174. !
 359. $\qquad$ ن.
$51,38,36-31,25,22,19,18,16,14-9,5$ 105,104,101-81,78-74,71,70,69,63,54

142,140-138,132,131,125-115,110 168,160,159,154-152,148,145,144 199,192,190,177,176,173,171

221,219,218,216,212-207,203-201 $235,233,230,228,226,225,222$

281,276,275-271,246,245,240-237
319,317,316,314,313,301-288,282 $361,360,349,348,343,336,333,330,325$ 368,367,365
32
 10....................نان
 تا تُانانا 32.

 292.

 294.


 267. 6مرابي!ي.
withry
191.......




16.

 139............................ آپ 139...... ام
$344,312,311,309,224,212,143,118,83$
365,352
223. $\qquad$
 118.

 352 $\qquad$


امورعامه
246. $\qquad$ نظارتامورعامدكز مـرواريان. انبياء علمنم السلام

281,264,163,122,121,120,73,66,60
362,356
66........................... انبياءكرامورنج كم
 174 كرت


| ابیا | Yens |
| :---: | :---: |
| 125,120,111,63,59,55,45,42,26,14,4 |  |
| 342,338,330,242,198,196,192,189,163 | ان大ّ |
|  | 183,181,178,156,150.139,118,80,79 |
| 14............................... 1 (1) | 365,312,309,227,199,189,185 |
| 147.................................مャ\| |  |
|  |  |
| , |  |
|  | 79.......... |
| 75...................................u\|ورلبا | 185................... |
| باز |  |
|  |  |
| 349............................. |  |
| جلجس الانخ | 227......................................... |
| جلس | انكوطِ |
|  |  |
|  | 110...........................................¢ |
| 345.................................... كرف\% |  |
| 3444.......................... | لبا لِّ |
| 326................................رإوه | انكسارك. |
|  |  |
| بك | 13. <br>  |
|  | الطا....................................... |
|  |  |
|  |  |
|  |  |

 6.
 7. $\qquad$



 6.................................. بيعترضت

 243. $\qquad$
 244
 242.

بكل هوام الامحبيكى

 242.
 \ll
(ـ) 291............................................ 4
 291.

 292...................................
 291 292....................................

بـصمت
 292...................................4
 بِكابرايّا
 282 "
 271

 349 $\qquad$ پ. 311,310 رازال بارُ
$138,101,99,98,97,96,91,73,15,12,10$
351
بـبـ
 .

 162
 بيجت

156,148,142,89,88,16,14,13,7,6,1

$$
342,276,192,173,169,168
$$


 156. 4


 89


 186




$\qquad$ 158........................................ 157........................ ت





 292.........................

## $\%$

$\dot{*}$
223 $\qquad$
 ! $228,209,165,162,150,149,83,79,69$, 305,259,258,257,242,229
إِّانقّ 257................................. 128..... 242 باكتان كا 259...................


 162
 ك
 221 تي 310.......................................ل 0\%


364.
-
365
..................
 255.............................
 251 الالانز
 253...................... ح户ت 252.

 252.

 259....... 253.........
 253
 256..........................
 255................................. 254......................... 259..........
 256............ 256.......................... 257..........................................
 320....................... 6 \% كج 260........................................... ت 258................................... 6 6於

 40..........
 تبنّ
 342
132............................................

 342.......................................... 1
 133............................... گَيسجديـ $321,320,306,259-255,253,251,242,69$ 337 258...............
 257 $\leftarrow$ 252...............................................

 253 ز"

 254 ,



 268.

 268.

229. $\qquad$


228. $\qquad$ ـعغلوب،وجات يون
 ر艹 بيتاولا
 150 نيالركماجا
．
$\qquad$
100，99，98，97 ترميفآيات．
97. $\qquad$


$\qquad$
158 $\qquad$ تعبيمالروّا．


 تا
 226. $\qquad$

218. $\qquad$ تاخراورتكا 6 بايان．


｜ت゙
 243. $\qquad$
 306，241． $\qquad$ بوتانيم
 244．． $\qquad$
 57，45．． $\qquad$ そ
 245. $\qquad$

36．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．

 146. $\qquad$ ．
 179. $\qquad$

 300. نروتقّن． تر بيت الپّ 285. $\qquad$

 286. $\qquad$ E
 201. $\qquad$



227,223,221,218,215
 226 نالون

F
 208.......................................int

 119.

 232............... 209,201...... سورةالمكسِّ بيانظظاركاوروروطانذ
 104........... سورة الكف يّلـوجالكى كلالاتك




104 צونوزوال6; كرب
 104 ; 104. $\qquad$
 ثتز بِّاُن
$68,67-62,59,44,43,28-21,14,5$
$270,269,190,158,146,141,88,84-73$
$343,341,326,287,276-274$
 78............................4


 67. 4

 24 4

$$
369,359,356,351,343-341
$$

 نـ 335,326. انزاضوتقاصر.


 342,336 انتظاتات 336
 332 . ر6 تج
 332........................ 331 تينصوصنصاگ́.......................................


 287




 341 $\div$

 247. جات بِ


ث

275 $\qquad$ ثالث عزّآذاصول
 275


## て

ج
311,309,134,131,118,114,110,109,107

134 مقر
 109 $\qquad$
 114 ويْ وطاط
 109. ".
 109.

.. 109. چن جثن.تنگم 318 $\qquad$ اشا
 310 خي حم حتمولانا جال الد

252 تيا


ج次



 339 6\% 328 $\qquad$





 349..........................
 248. ريّ .
 348 ; موراليال
 336 ت 248......... 308................................... تُجبـ

 325. $\qquad$



146. $\leftarrow$
 196.



194.
 165. ب
 292.

 268. تاءُ
 جبتَاپپ 143........................
 273.........
 194

61.
$\qquad$


 240............................................... 3.............................
 338 زن

 24..................................
2....................

?
 324................. 56,48,47................... 47 …........................
 48. .
 48
 ?
 173. (ياكنان

 325.......................................
 260. رיكا
 132.
 165...................
 274................
 39.............................
 136......................................
146........

180
 مها ثرّكمها 146.......................................


 68........................................... 133................................. 368.........
 67...........
 363. ب完 212...................


乙



 343,183,87,86,85.............?
 183.........


اللهم ان تهلك هذه العصابة من
112,111 $\qquad$ اهل الاسلام ...
296. $\qquad$ افضل الذكر لااله الاالله. انا النبى لا كذب انا ابن عبدالمطلب.............. 362 اوصيكم بتقوى الله والسمع الطالعة..............
 اصحابى كالنجوم بايهم اقتديتم اهديتم.......... 174
 183..............................................


270..................................


 287,278,230,113,112...... جا ج
113. جاركّ
جبت
جّنمتك 292.................................. 4

268,228,208,207,206 6

 352
 حوّ
 272. توقتچورُ ويحّي. جوروترونكواط 272........
 349...................................... 251.................................... 276. ميانبيوى كحوّ حقو
 273. اواكرع 6

 279.................................. 238.................
 ح, $4 . . . . . . .$. ${ }^{\circ}$ 306 امرارينلينزن

 25.............................................................
 78. $\ddot{シ}$ آ پ 164. بك ع ع

 190. اطاوت كريّ.

 120. با باركا 191............................... 1 . 1
 120........................... اوا
 270................................



188 وريإتشكا..
158.........................................

 148.................. , 148.....
 160................. 36 صضنسيوگكر.


 127 ك ك

 251 !
 255. $\qquad$

 253......................
 246 6
 245. 6;


$308,303,249,153,55,42,41,13,1$. 13. خلافت


4...........................................
 خلا فت احمبيكى طاقت 6 راز خيغ: وتت اور بحاكت ع 23


13

7................................. خلافترالبحـعانتخاب عموتح خانثان

 56.
55..........................................................................




 24.
18.


اختّا فـو سكت بيل.....................................
 192 قاءُزْ

خور
 319
 خليف

145,63,60,56,41,36,35,23,15,14,6,4
274,196,193,192,169
 7.............................................


 208. كبت 165.................
 133. "مترزو
 خط 60 ................ ميرفקف ש, 242.边

 41. بوجورة
 66

،

1. .

 167.
 خيفروتت
2. 



223
 ,

41 .
135. 13 .
 303....................................................
2...................................

42....................

136........................................

308..........................
41......... البام)

نيز, كيمّخمْتمزاطامراحم
 149.............................................. ${ }^{\text {b }}$
 241



 156. そ 241 $\qquad$
 بنا مووبا
 209



$268,266,253,232,230,229,213,212,210$
336,333,324,320-318,299,293,278
368,363,362,351,345,343,339,338
 72.

 324

 148
 112 ويملكرويا 21


 101...........................................
 اقتّ 71................. 22
 140..........
 123. $\qquad$

 122......................
 202 $\qquad$

 24. $\qquad$



 336..............................
140............
 164.........................
 158. ! 157.........................
 160. 4
 160. 8.
 103

 161

 158
 158. وا/ورب، 6
 163......................................... رختشرام
 368.

> ورورثّمْف

وعا/وعاكّن
$45,41,40,38,36,33,29,25-18,13,7,4$
$122,120,101,89-85,83,67,57-53,50,47$
146,140,139,136,134,129,128,125
$209,208,204,201,199,156,155,148$

111 $\qquad$ هذه العصابة من امل الاسالام 212. 21. 103

 201
 21

 -قن 54 \%
 146.....................................
147...................... 122..............................

 22. طِّ

## رنّ اول(خَّبكجيبي)

259.......................

ونّزورم
259
 , فزّ
 260

259

ورك
 345. كن كِّا
 25

눈
 45. ت ? 48......

 208..............................
 22.....................
 136................................


36............................... 55........................
 45. E
 29 -
 351 باط بوجاتّ بي


 139........................................... 123.............. 201............................ مدیル. $318 . . . . . .$.

|  | 316,315,51..................6) |
| :---: | :---: |
|  | 51............. |
| 349. $\qquad$ ج <br>  |  |
| انكاخيالركيل........................................ | 316................................ |
|  | b |
| 350.......................2.26 | 321,103......................... |
| رلوبيت | ; |
| 238,237,235,55............................ | ; |
| ر. | 325,301,294,291,288,287,228,210,74 |
| 72,59,57,49,37,36,31,21.20,17,9,7,1 |  |
| 215,213,209,201,148,105,92,89,88,79 | 294............................... |
| 263,261,251-249,248,245,231,230 | > |
| 318,303,301,291,289-287,279,278 |  |
| 340,336,335,333,327,324,323,321,320 | 296........................................... 6 |
| 359,357,354,349,347,345 | 294.............4 ك6. |
|  | ;كرإنكا فلفـ، |
|  | 296................................. |
|  |  |
| 289 <br>  <br>  |  |
| 72................................................ |  |
|  |  |
|  |  |
|  | 248.......................................... |
| 347...................................4 \% \% \% \% | $ノ$ |
|  | رو |
|  |  |
| 287.......................... ش ش | 246................................... |



جلس 247 گرُنبا
 249. زَ
 287.

 17.

326............................................






343..........................................
 93. بّ


280,240,239,238,237,236

 236. ينيمر. 236........................

ريميت
245,244,240-235

صمصル
 لالیّنْبا
ارركن!إنـنا اراقيت \% ز
آب 264.

 264.
 350.............................


 348......................................... 225..................... 367.............. 217............. زن
 325. باءْ زك
 284.


زينت
 226


رنضان المبارك
253,93,49,48,47,34.
 روزى
 271 $\qquad$
 271.


روّ
309,286,267,220,219,51,22,3.

219. ~

51
 ,
 282............................ 283................ ريرّوليوثن..............................
4. $\qquad$

6. $\qquad$ رئِكا 234 ............................. ;

ارورياكى اورنبا
149
 309.

ز 49..................................................... r

270. $\qquad$ ،وكتّ.

341 $\qquad$ ؤلسمي
74. $\qquad$ 183..........


 221........................................
$\qquad$
$\qquad$
سوال و.هواب

$\qquad$
 122....................................... 168,165,157...........................




 227...................................... 221............................. 218. $\qquad$ زينتاورتقاخز6تحاتن.
83.......................
 $\checkmark$

310. $\qquad$

سُّتْ ט/ساتْشران

ساتْنرانو 235.. $\qquad$



$147,146,139,136,135,88,85,84,83,72$
318,240,212,210,209

139. $\qquad$
سيرمّورا مثنا مصاحب|ورصاجْ اوكامتحأتّن 139. $\qquad$
 72. $\qquad$ مـجم(بثارت)

 136. $\qquad$ لِّ



 69.


 65

 286.
 39............................... 357.

 ק رحنإناس
 355........................... 356.
 285

 جب بيت ليت تِ

 284.运官
 85. يّ يك با صرسالـو.و.ل...337,336,304,303
 303. ..6;
 320................. 6 ,

237,236,235,232........20.ط

 236 صفاتالميح


 280.................. 235. رلبوبت 233.................................. 19. الرُن. 19. $\qquad$ 18 N صناكَ 248.................
 صل علّ
 340


## $\dot{\varphi}$

ضالين

 239.

 315. ,
 312........................

 309
 308 كولكرثّثز


 310................................................
 317...................................................

 337...........................................
 317

304.
.

309


 242. رو پطكط

37.



1. $\qquad$

 307 $\leftarrow$
 b


 355，354 روراي
صاجزاهمزاظز اجم 88


28
 $\varepsilon$

78
 عباوات
 117. シ＂
 94 קرنتّجرلעا ، 282. بـ！

## b



76．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．
 ー
118.官

76．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．

185.

گ\％
11.
－

79.
 ي
 80．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．
 13

 7.
 182．．．．．．．．．．．．．．．．．
 119．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．


حمتُوْابُمُعبرالشّانُ
285
 حم توبرالمطلب
362.
 وبوريت
 300. $\qquad$ كوبا
 298
 295 متامبوريت 74,35,34,6............


35. ،
34.......... ع
 267 6ا-مرائي! 237

 عرم
 235
 ب
190,178, 177, 147, 122, 112,96,45,42

$$
309,306,206,191
$$


 339............................................
 114 E

 286. شیت
 53 "
 279............................................. تقالت 282.........................
 117............................. عبإت 6" 280.

 عبارى
 52. $\div$ وب

 عبات
 280.................................................29

101 وبِثنور
81..............
81.......................

192,189 $\qquad$ تهريراران

 189. $\qquad$
192. $\qquad$
 189. $\qquad$

 195. $\qquad$

$236,162,161,160,159,136,39,38$
 164 $\qquad$ ونياوكا

 163. $\qquad$ وهانمعاملا تِّبا
 159. $\qquad$ استّعال

158. $\qquad$

237. $\qquad$

136.. $\qquad$

 160. $\qquad$ ;
 39. $\qquad$ .

177. سِّك


25..............

وظم بتم كروار
 علم

12. $\qquad$
الدّتالّ

طاضمكاكمْراصل

10.............................................

حم حتّعاكرمال山ّ
74.......



74...... آب

حمرتثنّن 35. $\qquad$ ، 8
 117. $\qquad$

|  | 237 هيـائيت يّلعدلكاتصور <br>  |
| :---: | :---: |
|  | 239. : <br>  |
| 44,41,39,27,26,25,22,19-16,12,6,2 |  |
| 124,110,89,81,77,71,70,68,67-62 | 38.................................... |
| 174,159,155,153,152,150,144-142 |  |
| 253,252,251,247,197,187,182,177,175 | 161 بحك بحال <br>  |
| 326,325,323,318,317,296,287,286,260 |  |
| 367,363,360,357,354,338 |  |
| حمترمزاغامرْضى <br>  | 163........... <br>  |
| 110.............................................9و |  |
| غلاقى <br>  |  |
| 300........................................ ¢ $_{6}$ | 61................................8) |
|  | ثبثّ ووثغ |
| 95...................نو | 225......... |
|  | $\varepsilon$ |
|  | 293,266,74,34 |
| فاعاوإن اكم | $309$ |
| \% |  |
| 212. فاتُاويان عالممون. فاتح تِّثن | 244 <br>  <br>  |
|  | 244 $4 \mathrm{H}_{6} 6$ |
| 209............................................. | 241............... |



فاراييـ
310 يّنثز بلبي

96 فاران ; 310...........................
23 ;ؤ
23........................ ; زيَّغ ط
167,134...................................
حمثتمنتض فضل الرحّنميروك........ 357
فم
;
171 بّ
171...........................
33.
 فلـف
 350...........................
 294 Ct

 296. نف
 348 $\leftarrow$ فلت
 202 كَفل كِّبِّي.

| 碞 |
| :---: |
| 73，70，66，62，59，52，44，31，25，14，12，9 |
| 139，128，121，105，96，93，92，87－82，75 |
| 182－171，168－166，162－160，145，141 |
| 208，206，204－201，197，190，188，184 |
| 263，240，236，233，230，223，218，211，209 |
| 292，291，284，282，276，273，270，269，267 |
| 313，312，306，301，299，298，296，295，294 |
| 365，341，323，319，318，317，316，315 |
|  |
|  |
| 209．．．．．．．．．．．．．． |
|  |

267 $\qquad$
292．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．

97. تصريفآياتاورغا يَبنيم عمنّ
 294．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．． 6

 178. $\qquad$ س
 319. $\qquad$

 171 آسانكثانيم

 73. $\qquad$ وصاحتوبالغت ；772．．．．．．．．．．．．

174. $\qquad$

142. $\qquad$ قا

142. $\qquad$ ｜

قووليت／قووليتوعا
54 $\qquad$ استجابتلشّكمتى ． 44. $\qquad$ 54 $\qquad$


56.
己户

55. $\qquad$
قٌرت
 94．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．4
172．． $\qquad$ ；ّآنكريماورثانونقرت
 91 $\qquad$ 94. $\qquad$ ثاروـ＜عقر $\dot{b}$
 343．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．

ز ${ }^{\text {آناصطلإ/اصول }}$
(بَّ
291 $\qquad$


62.........

$\qquad$

161 $\qquad$




269 $\qquad$ \%



رب انى لما انزلت الى من خير فقير
299.


52. $\qquad$
وّانیا
?
248. $\qquad$
173. $\qquad$ ;
172. $\qquad$

75. $\qquad$
171 $\qquad$

; $96 . . . . .$.

323. $\qquad$

آبیْ
211. $\qquad$ ; آنكريمّ
211........."

285. $\qquad$ وا
 306. $\qquad$ اصرهم بيانزفاكَّك
; آنكريم6اسلوب؟
52..............
 201. $\qquad$


172. $\qquad$

316.. $\qquad$ ,

75. $\qquad$

217. $\qquad$ لوكوكب



## كركنان

$349,347,342,341,248,189,64,38,37$
359,354,350

 342 اجمبت
 341 $\div$



 29.................................. 2 ,
 42.........................................
 كثّابـت
45,27 .......................... آبينكمالاتاساسلام. 191 اوبواور،ّ"نّن.
 اتر بالموارو........................................... 138. الاتتيعاب. 190,189,120,113,112,100.. 28,19................................. 113.......................................... 329,86................................... 148 R 281,71......................................6. 41,22........................................ 296. روثّن فارّى.......................................
;
153...

197........................................
; 153...........


154 $\stackrel{6}{2}$
وضاء،ورو
 سيرة 348

 244.........................................466

وتوترسيـ.....................265 266,26 265.........................
266.
 ; 20

 6
 319 $\qquad$

※يا 237......

 231... $\times$ —
気 198. :
 220.......
 220 $\sum_{6} L_{2}$
220. سكيُّك 220............................................
220.
 220............................................ 220. كَبْك
, 293,266,74,34........................
308 روزنا مـالفنل 39. "رانغْمُ 112 "يمتابّنصشام.
 111,110 كتابا لبيـ.
25. $\qquad$ كتاباجبجاولا:نن المبارك
12. كراتاتالصارقين 127 6565
42,61................................. 71,70,63........................ 244 Eve, 111.......................................
$306,89,88,73,38$ كراقك...........

136.


 136
 138. منتبرانخ كركש
 221...................... 293 كث كثيمّپ 293.


 81 $\qquad$ اكنا 76．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．． آرتق： 78．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．


79．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．． 2 2 81 $\ddot{E}$

82 كي
 82．．．．．．．

 78．．．．．．．．．．．．．．．．．．．之660 225，75． لباヒإقوى



 364 4


246
 33．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．
 133．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．．بと

 222，135．


## $\vartheta$

． 56
167，157．
220 سطـط لينٌ كورُنؤا

245 گنزمثميمّ．

 182. طورپッジャ $J$

لا الحالا ال山ّ
 لا لا


ليتشا اقدر
 115
 ليّن وكن
 270....................................



6
 323 اول
 باكتّان اور بهارت ک 162
 291,132,131...............
 291........................................

 310



61............

233...................................

جلس الا 361
 Fُ

 368 ...................................................
 248
 260. لنن
150................... لنترظا 336. ت
 359. .... 309....................... 216............................... انا 226............................
 227 225.......... 217....................................... 217...................
 221



68.


144. $\qquad$ Hi

145. جا


145. $\qquad$ بولي.

337. $\qquad$

 145. $\qquad$

314 $\qquad$


255.

 144. $\qquad$ كساباجاربا حمت تُتح مؤور علي السام كَ بيارى الى زبا بيول بي 338. $\qquad$


 255. $\qquad$

 252. $\qquad$
 حز 252............................
 252. $\qquad$ 6 6
338. $\qquad$


109. $\qquad$

39. $\qquad$ اواكيا بعبو,
التّ
69. $\qquad$ كوثشكريّ.
243. $\qquad$

244. $\qquad$


42 $\qquad$

259. $\qquad$

 255. $\qquad$ والو66;
 67. $\qquad$ ب
61. $\qquad$

43. $\qquad$ ث
 41. $\qquad$

 63. $\qquad$

61.......................
 44. ثالب بي.



 65.. $\qquad$

مُمرثضانصاحبكات يكسجيريّنالى 253. $\qquad$ ;
 68. $\qquad$ ,
39................ب 61..........

139. $\qquad$ آپک

$166,165,156,144,143,134,133,132$
320,310,189

186. $\qquad$




132 $\qquad$

283. $\qquad$


 297.................................. . . السامكصصراتت6زننهثوت بي.....................
 نانب6 267....................................
 256............ كآ

40. $\qquad$


188. $\qquad$

255. $\qquad$ هوورٌ 6 كها

260. $\qquad$

45. $\qquad$


314. $\qquad$

253. $\qquad$

145. $\qquad$


252. $\qquad$


337 $\qquad$ زيوركزبانذ.

39. $\qquad$ يح

307. $\qquad$

146.
 60. $\qquad$ !
 62. $\qquad$

273.


266. $\qquad$ ;

264. $\qquad$ الثاننمونقاءُزْ اليا

211 $\qquad$

264. $\qquad$
 264 $\qquad$

$\qquad$


175. $\qquad$

26. $\qquad$

34 $\qquad$ كرماوردج6سلوكزمْاليا


25 سيراقومخارهم.

100. $\qquad$

 101. $\qquad$

50. $\qquad$
 آそ 164. $\qquad$


| حبتافِ |
| :---: |
|  |
|  |
|  |
| 129......................... كـ، |


مُمرثضان


آپ
252. $\qquad$ لكهوايا.


60,56-53,52,35-32,25-23,20,19,7,6
100,99-97,85,78,73,71,70,67,66,62
$159,157,148,138,114,113,111,101$
193,191,180,176,175,174,169-160
$317,314,269,268,264,230,213,197$
368,364,353,351,318

160. $\qquad$ آ 281 ............... 60.

 169. $\qquad$ آ $24 . . . . .$.
 78



 292. $\qquad$



111 $\qquad$ ". جنو 173..........................................2 اليان




66. $\qquad$ خلا فت كمنصب پ夫بْيُّاواوانول.


157. $\qquad$

193. $\qquad$ . ${ }^{\circ}$
 82......................... كيثـيتغ

112. $\qquad$ 148. $\qquad$
 310.....................................4 367..................
24.

174. $\qquad$ نظامجركاكوا

174. $\qquad$
آ 32 آ...................................

183.................................................

121. $\qquad$
353.

70. $\qquad$


81 $\qquad$
آبیْ

34 $\qquad$
73 $\qquad$

53. $\qquad$
54.


178. ع 1....................

278. $\qquad$

54. $\qquad$
52. $\qquad$
انا النبى لا كذب انا ابن عبد المطلب ( آ پعّئِّهُ 362. $\qquad$

$255,253,252,251,246,245,136,127,55$
258
ثالفانترابير
 851............................... كون
 19.

343,138,85 ب
 343. آتِّ. زانب
 95 95 .......... \% 292..............





 63. ب6 بك
 158

 315............
 66..........

306..........................................
 ?قو كَبِّ 176..................................................
 ارونا 100......... 368.......... "م بّ. 67...........
 268.荡
 212............................................... 212..................
 213. بـ
137................. 190<

 118............................
139....




116. $\qquad$

323. 6 Fُ ${ }^{\text {F }}$
253.

325. $\qquad$

 360. $\qquad$ السامكصراتتكزننمثوت بي .
$\qquad$
 17. $\qquad$


178. $\qquad$
 187...............
 15. $\qquad$


 89. $\qquad$范


317. $\qquad$


39 $\qquad$ シ

174. $\qquad$ 46

 143. $\qquad$

 180. $\qquad$ ك كنيا
 آپعليالـارمكا 110. $\qquad$ البإ
 22.

 144. $\qquad$ 354. $\qquad$


 355,354. $\qquad$ كروايات
 182.. $\qquad$ آبچلييالسا مكاكتبكانميت.

$$
\begin{aligned}
& \text { حمترمزاغامامرقاوياذ }
\end{aligned}
$$

ثغز تاوررضوان6 نيكانجام كي
264 $\qquad$ 6ص كياجا كلا تيت


رمنا فٌت


63 $\qquad$ .بلا جاسكاب
هنصبغلا فنت





32 $\qquad$ بو

 حمرتموّى' عليـا السلامر........299 300.2
 مو'ر
 59 $\qquad$ مونون 343,197,112,85. $\qquad$ ك
 343. $\qquad$ آت


310 $\qquad$ مصوب

348,142
276. $\qquad$

268. $\qquad$
277............

300.......................................

نغ با
239. $\qquad$



164. $\qquad$

 229. $\qquad$


بغضوب

236. $\qquad$

ثغ

ال山كط 272..............





نفـيات 203.
 كاز/صلو

148,147,140,124-115, 105,49,29,7 210,204,191,185,184,183,169,168,156

324,289-282,280,279,277,261,213
343-341,340,331,327

 117. E
احبابطظز

 121.......................................4.

 191.............



 123. كَيكّ
 120...........................
 122.

; آنكريكزّا 323. 4 340.................. نظارتاصلاعوارتا
 365,335,313,308,16.
 16 نظامكاطاوتان 192. ;

تظام وصيتت

 0

 211......................
 211.................................. ح寝 209...........................................
 212...........................................

206.........................................

123. $\qquad$

 285. $\qquad$ كاحفا
 284. $\qquad$

286. $\qquad$ نمونمو.

286. $\qquad$
 285. $\qquad$ والتا
 122.............................. نمازوراكيكا
283. نا
 124. $\qquad$

122...... نماز

 210... $\qquad$
$\qquad$
9
واققات
 119. $\qquad$
压

 ام يكيّپ 118. $\qquad$ نمازاواكرــنكواقت


221. $\qquad$ بحتو
115. $\qquad$


327. $\qquad$ انتظامهو

287. $\qquad$



331. $\qquad$
 282. $\qquad$


116. $\qquad$

284. $\qquad$


118. $\qquad$

$\qquad$
$\qquad$
283. $\qquad$


213. $\qquad$


283. $\qquad$


113. $\qquad$ .
113,111 $\qquad$ جنَّسبر كـواقعات
362. $\qquad$

$\qquad$





79 $\qquad$ r

76..................



 81 $\qquad$


355,354 $\qquad$



68. $\qquad$


299. $\qquad$ واقت حزتوْواب 285. $\qquad$ ت** 6 واقت

138. $\qquad$ ثقتت طاسلمك

268. $\qquad$ وت

64.


329. $\qquad$ ،

120........................... اوا


77.............................................

57. $\qquad$ با وثاهاورلورُ عك 6
توپ.
11 $\qquad$ اكَّ
 84.


 100.................

جـسـسالا

342. $\qquad$
351. $\qquad$ كَكْ ن6واقتح.

353. $\qquad$ واقتات

44 $\qquad$ ,

179. $\qquad$
179. $\qquad$



 وصر الٌّن

13 $\qquad$

 39.
 وثفت جِير
$369,359,307,242,80,69,40$.

369. $\qquad$


كوانُّتان



258. $\qquad$ نئ وكالتك قيّام

118 $\qquad$若

208. $\qquad$ اظهبارُبت

348. $\qquad$

42. $\qquad$


142. $\qquad$ ا اطّابيا تواتها
38. $\qquad$

كرمالنظ


 337. $\qquad$
187,140,139,186. $\qquad$ 140. $\qquad$
 186. $\qquad$
 186. $\qquad$


 102,101. $\qquad$ واحرانيت
 101. $\qquad$



 ونيا كَمزننى 157. $\qquad$


 159. $\qquad$ معالات
 227...........................................


$\qquad$

$\qquad$

223...

227. $\qquad$







223. $\qquad$

 629.................................. 6

258. $\qquad$ ركّت
وريا
93. $\qquad$


0
بلاك

$\qquad$ 311,167,134,105. 6........... 134,105. $\qquad$ جثنى6ابيش 311,258,212,132. $\qquad$
 132. $\qquad$
 $\checkmark$

162,158,157,140,133,131,118,109,79
$316,249,241,229,228,227,223,212,208$
سارك ليرثّن تجن
223. $\qquad$ كالوّ



159. $\qquad$
 140.

 164. $\qquad$

119 ..... ليوّث310 لئنان. يوينيارم
84.  ..... 236,100 

100
 236.


